Chap -5

पंचम अध्याय

# प्रमुख संग्रह ग्रंथों का सम्पादन

पंचम अध्याय

# प्रमुख संग्रह ग्रन्थों का सम्पादन

गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा सम्पादित हिन्दी के अनेक अलभ्य और दुर्लभ ग्रन्थों के विषय में विगत पृष्ठों पर विवरण दिया जा चुका है । प्रस्तुत विवेचन में यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि गुजरात में रहकर एक गुजराती कवि ने हिन्दी के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किया, वह हिन्दी भाषी क्षेत्र में भी रेखांकित किया गया था अन्यत्र ऐसा कार्य बहुत कम ही हुआ है, यह स्पष्टतः कहा जा सकता है ।

गोविन्द गिल्लाभाई मूलरूप से साहित्यकार थे तथा रचनात्मक वृत्ति से सतत् जुडे हुए थे । उन्हें यह स्पष्ट आभास था कि अनेक पुस्तकालयों एवं प्राचीन पोथीखानों में हजारों भाषा-ग्रन्थ अज्ञातवास में पड़े हैं, कालान्तर में ये ग्रन्थ या तो गल सड़ कर कालकवलित हो जाएंगे या फिर उत्तराधिकारियों की उदासीनता तथा नीरसता के करण रद्दी के भाव बेच दिए जाएंगे । उन्होंने समग्र सौराष्ट्र, काठियावाड़ तथा गुजरात के ऐसे विद्या केन्द्रों, ग्रन्थालयों, रजवाड़ों तथा पुरातत्व संग्रहालयों से सम्पर्क बनाया जहाँ ऐसे साहित्य ग्रन्थों के एकत्र होने की संभावना थी ।

गुजरात हिन्दी भाषा के लिए बहुत ही उदार भावभूमि रही है । यहां हिन्दी के प्रति अपार स्नेह, सहानुभूति तथा अपनत्व की भावना प्रारम्भ से ही रही आई है । महात्मा गाँधी ने यहीं से **हरिजन पत्रिका** के माध्यम से गाँधी हिन्दी का प्रचलन प्रारम्भ करके यह विज्ञापित किया कि कैसीभी हिन्दी बोली जाए किन्तु हिन्दी बोलने का आग्रह अवश्य रखा जाए । एक ठेठ गुजराती काठियावाड़ी गांधी परिवार के व्यक्ति ने यहां हिन्दी की जड़ें गहराई में जाकर

जमाई । इनके साथ अनेक राजनयिक तथा साहित्यकारों ने भी इसी उदारता का परिचय दिया। डॉ. रमणलाल पाठक ने ठीक ही कहा है कि 'हिन्दी भाषाभाषी एवं अहिन्दी भाषाभाषी प्रदेशों को यहाँ के कवियों की कतिपय श्रेष्ठ कृतियों का परिचय कराने के शुभाशय से कवि गोविन्द गिल्लाभाई, डाह्या भाई देरासरी, के. एम. मुंशी, मिश्र बन्धु, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, जनक देव, डॉ. नटवरलाल व्यास, कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह, जेठालाल जोशी, के. का. शास्त्री आदि सच्चे हिन्दी प्रेमियों एवं विद्वानों के द्वारा जो प्रयत्न अब तक किए गए हैं, वे सर्वथा सराहनीय हैं ।'[1] गुजरात के अनेकानेक ग्रन्थालयों के महत्वपूर्ण हिन्दी ग्रन्थों का विवरणात्मक विश्लेषण गोविन्द गिल्लाभाई ने प्रस्तुत किया है, ऐसे अनेक ग्रंथालय आज भी गुजरात में प्रतिस्थापित हैं, जिनमें हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी साहित्यकारों के विपुल भाषा ग्रंथ संग्रहीत हैं । ऐसे ग्रन्थालय में लालभाई दलपतभाई इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्डोलॉजी व भोलाभाई जैसिंग भाई विद्याभवन, अहमदाबाद, हेमचन्द्राचार्य जैन मन्दिर पाटण, दाही लक्ष्मी लाइब्रेरी, नड़ियाद, प्राच्य विद्यामंदिर, बड़ौदा, फार्वस गुजराती साहित्य सभा व भारतीय विद्या भवन बम्बई, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट तथा भुज, भावनगर, दर्भावती, सूरत आदि स्थानों के अतिरिक्त,राजस्थान के जैन भण्डारों में सुरक्षित, हस्तपोथियों के विवरण, गुर्जर भारती तथा सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अमदाबाद तथा अन्यान्य अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के ग्रन्थालयों में इस प्रकार की पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं, जिन्हें गुजरात के हिन्दी प्रेमी साहित्यकारों ने संकलित किया था। इनमें गोविन्द गिल्लाभाई का वैयक्तिक प्रभाव सर्वोपरि कहा जाएगा ।

गोविन्द गिल्लाभाई ने जो भी साहित्य सम्पादित किया है वह मात्र संकलन या संयोजन ही नहीं है । उन्होंने उस ग्रंथ के पूर्ण विवरण भी एकत्र किये थे, जैसे पाठभेद हेतु अन्य पांडुलिपियाँ, समकालीन ग्रन्थों में उस ग्रंथ का उल्लेख, कृति एवं कृतिकार के विषय में प्राथमिक सूचनाएं, अप्राप्य होने पर गोविन्द गिल्लाभाई ने उस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करा ली थी और जब यह भी सम्भव न हो सका तो स्वयं उस स्थान पर जाकर आसन जमाकर बैठ गए और स्वयं ही उस ग्रन्थ की प्रतिलिपि तैयार कर डाली । ऐसे प्रतिलिपि किए हुए अनेक ग्रन्थ उनके ग्रन्थागार में उपलब्ध हैं ।

गोविन्द गिल्लाभाई धार्मिक निष्ठावाले सम्प्रदाय सापेक्ष साहित्य के प्रति अधिक आकर्षित रहे हैं । वैसे भी वह पुष्टिमार्ग में दीक्षित खबास परम्परा के वैष्णव कवि थे, गुजरात में वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बद्ध अनेक कवि, आचार्य तथा सम्प्रदाय हुए हैं । सम्प्रदाय सापेक्ष

साहित्य में वैष्णव साहित्य के अन्तर्गत कृष्णभक्त कवियों में नरसिंह, मीरां, बैजू, कृष्णदास अधिकारी, मुकुन्द गुगुली, त्रिकमदास, हरसजी मेहता, गिरिधर, आदित्यराम आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है । इन कवियों के हृदय में बृजराज, ब्रजमण्डल और ब्रजाभाषा के प्रति अनन्य अनुराग था, इन कवियों में पुष्टिमार्गीय कवि दयाराम ने तेतालीस ग्रंथ और लगभग 2000 पद ब्रजभाषा में लिखकर अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त की । इसी तरह स्वामीनारायण, संत परम्परा, सूफी जैन आदि के अनुवर्ती सैकड़ों कवियों की कृतियॉ गुजरात में बिखरी पड़ी हैं ।[2]

गोविन्द गिल्लाभाई के सामने वैष्णव भक्ति से सम्बद्ध विपुल साहित्य पृष्ठभूमि के रूप में उपलब्ध था । कृष्ण भक्ति काव्यधारा का प्रयास यहां विस्तृत रूप से छाया हुआ था।

कृष्णभक्ति काव्यधारा के स्थापित कवि के रूप में यहॉ भालण को ख्याति प्राप्त है। भालण सन् 1480 के आसपास वर्तमान माने गए हैं, हालांकि भालण से कुछ ही पहले नरसिंह मेहता हो गए हैं किन्तु उनका अधिकांश काव्य गुजराती में ही सृजित हुआ है । इनके कुल 159 पदों का सम्पादन डॉ. दशरथ ओझा ने किया है ।[3]

भालण के बाद कृष्णभक्ति धारा को अग्रसर करने वाले कवियों में प्रयास पाटण के केशवदास कायस्थ (सन् 1477 से 1536) प्रसिद्ध हैं । यह मुख्यरूप से कीर्तनकार थे । 'श्रीकृष्णक्रीड़ा' नामक गुजराती भाषा के महाकाव्य के चौदहवे और सोलहवे सर्गो में इनके कुछ पद ब्रजभाषा में भी मिलते हैं । इनमें से एक पद चालीस पंक्तियों का है । यह कृष्णभक्त कवि तो थे किन्तु किसी सम्प्रदाय-विशेष में दीक्षित नहीं थे ।[4]

गुजरात में भक्तिपरक काव्य का प्रचार और प्रसार इतना लोकप्रिय हो चुका था कि जैन-कवियों के रासोकाव्य में अनेक स्थलों पर कृष्ण चरित्र से सम्बन्धित अनेक लोकगीतों को ज्यों का त्यौं सम्मिलित कर लिया गया है ।[5] गोविन्द गिल्लाभाई भी कृष्णकाव्य के प्रति आकर्षित होकर काव्य सृजन एवं काव्यसम्पादन में प्रवृत्त हुए थे, यह प्रभावान्विति उस काल विशेष की थी जिसमें वह रह रहे थे ।

गोविन्द गिल्लाभाई के सम्पादन कार्य को हम मुख्य रूप से निम्नांकित वर्गो में विभाजित कर सकते हैं -

1. स्वयं की कृतियों का सम्पादन
2. मुख्य कवियों की अधूरी कृति को पूर्ण करके

3. अज्ञात या अल्पज्ञात कवियों की कृति की पांडुलिपि तैयार कराके व्यवस्थित रूप से सम्पादित करके

4. सुधारा-वधारा जैसी टिप्पणी में अपेक्षित सूचनाएं एवं निर्देश देकर उन्हें सम्पादित करना ।

5. किसी विषय विशेष पर सम्बद्ध कवियों के काव्य एकत्र करके संकलन तैयार करना ।

6. मुख्य कृति विशेष की व्याख्या तथा अनुवाद तैयार करके उसे सुलभ बनाकर तैयार करना ।

7. कृति की भूमिका लिखकर उसके सम्बंध में अन्य विवरण संलग्न करके ।

8. स्वयं की हस्ताक्षरित लिपि में तैयार करके कृति की शुद्ध प्रति सम्पादित करना - आदि

गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक कृतियों का हिन्दी से गुजराती में तथा गुजराती से हिन्दी में अनुवाद तैयार करके भी कृति को सम्पादित किया था, जो अत्यन्त परिश्रम साध्य था ।

सम्पादन के वृत्त में यह अनुवाद धर्मी यत्न एक ही व्यक्ति द्वारा बहुत कम हुए हैं।

हिन्दी कवियों में अनुवाद करने की प्रवृत्ति बहुत पहले से मिलती है, परन्तु प्राचीनकाल में किए गए अनुवादों तथा आधुनिक काल के अनुवादों में न केवल गुण का अन्तर है, वरन् मात्रा का भी बड़ा अन्तर है । भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग के प्रायः सभी प्रमुख साहित्यकारों ने कुछ न कुछ अनुवाद-कार्य किया है । इस युग में विशेष रूप से संस्कृत, बंगला तथा अंग्रेजी साहित्य से अनेक अनुवाद हिन्दी में हुए हैं ।

गोविन्द गिल्लाभाई अपनी मातृभाषा गुजराती तथा काव्य भाषा हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत भाषा जानते थे, अतः उन्होंने संस्कृत से ही अनुवाद किए हैं । संस्कृत ग्रंथों के समान ही कुछ हिन्दी काव्य ग्रन्थों के गुजराती गद्यानुवाद भी उन्होंने किए हैं । गुणात्मक दृष्टि से कुछ हिन्दी काव्य ग्रन्थों के श्रेष्ठ अनुवाद उपलब्ध हैं । गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व के स्वरूप तथा विकास के अध्ययन की दृष्टि से इसका अपना महत्व निश्चित माना जा सकता है । गोविन्द गिल्लाभाई के अनुवादों के अध्ययन के आधार पर उनके आचार्यत्व की

व्यापकता तथा आधुनिकता भी सिद्ध होती है ।

जैसा कहा जा चुका है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने प्रधानतः संस्कृत ग्रन्थों का ही अनुवाद किया है, परिणामस्वरूप अपने युग के सभी प्रमुख हिन्दी लेखकों की तुलना में उनके भाषाज्ञान की संकुचित सीमा स्पष्ट हो जाती है । गोविन्द गिल्ला भाई हिन्दी ग्रन्थों की गुजराती तथा गुजराती ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद कर सकते थे, परन्तु नहीं किया, क्योंकि कदाचित हिन्दी ग्रन्थों की गुजराती टीका करके उन्होंने अपने इस कार्य के एक अंश की पूर्ति करनी चाही हो, तथा जिन ग्रथों का अनुवाद उन्होंने किया है, उनको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी गुजराती ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता ही न समझी हो । जिस प्रकार शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद उन्होंने गुजराती में किया है, उस प्रकार के शास्त्रीय ग्रंथ उस समय गुजराती में नहीं थे । कदाचित इस अभाव की पूर्ति के लिए ही उन्होंने अपनी मातृभाषा की भी यथासंभव सेवा की है जिससे उनका मातृभाषा प्रेम समझा जा सकता है ।

गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा अनूदित ग्रन्थों के विषयों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने केवल उन्हीं विषयों के ग्रंथों को अनुवाद के लिए चुना था, जिनका प्रत्यक्ष संबंध साहित्य तथा साहित्यशास्त्र से है । **वक्रोक्ति पंचाशिका, अमरु शतक** तथा **चौर पंचाशिका** को छोड़कर, शेष सभी अनुदित ग्रन्थों को अनुवाद के लिए चुना था, जिनका प्रत्यक्ष संबंध साहित्य तथा शैली उनकी काव्य कृतियों के समान ही है । आशय यह कि गोविन्द गिल्लाभाई ने उन्हीं विषयों के ग्रन्थों का अनुवाद किया है, जिनका साहित्य तथा साहित्यशास्त्र के साथ निकट का संबंध है तथा जो उनके मौलिक साहित्य लेखन की विषय सीमा से बाहर नहीं है ।

रीतिकाल में ऐसे अनेक कवि मिलते हैं, जिन्होंने अपनी कृतियों पर स्वयं टीकाएँ लिखी हैं । उदाहरणार्थ भिखारीदास जैसे कवियों का नामोल्लेख किया जा सकता है । परन्तु इन कवियों ने केवल अपने शास्त्रीय ग्रन्थों पर ही टीका लिखी है, मौलिक काव्य कृतियों पर स्वयं कवि द्वारा लिखी गयी टीका सामान्यतः नहीं मिलती । गोविन्द गिल्लाभाई ने एक ओर अपनी कृतियों की टीकाएँ लिखी हैं, साथ ही अन्य कवियों की कृतियों पर भी टीका लिखी हैं तथा दूसरी ओर अपनी मौलिक काव्य कृतियों तथा शास्त्रीय काव्य कृतियों दोनों पर टीकाएँ लिखीं हैं । इसके अतिरिक्त उन्होंने गुजराती तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में टीका

लिखी हैं । आशय यह कि हिन्दी कवियों की तुलना में गोविन्द गिल्लाभाई एक ऐसे कवि हैं जिनमें टीका करने की प्रवृत्ति विशेष रूप से मिलती है ।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने जिन ग्रंथों की हिन्दी टीका लिखी हैं वे प्रबोध पचीसी तथा नैन मंजरी के अपवाद के साथ सभी शास्त्रीय ग्रंथ हैं । आशय यह कि इस प्रवृत्ति में गोविन्द गिल्लाभाई रीतिकालीन आचार्य कवियों की परम्परा के प्रतिकूल नहीं गए । शेष दो ग्रन्थों पर जो टीका लिखीं हैं उसका कारण उन रचनाओं में श्लेष आदि अलंकारों का प्रयोग बाहुल्य है, कवि ने इस बात का उल्लेख भी किया है । अपनी तथा हिन्दी के अन्य कवियों की गुजराती टीकाएं कवि ने गुजरात की हिन्दी प्रेमी जनता के लाभार्थ ही की थीं । इसलिए जिन ग्रन्थों पर कवि ने गुजराती टीका लिखी हैं, वे पूरी हैं जब कि जिन ग्रन्थों पर हिन्दी टीका हैं उनमें से केवल कठिन अंशों पर ही टीका लिखी गई है । आशय यह कि किसी ग्रंथ की टीका करते समय कवि ने उस ग्रंथ के पाठक वर्ग का विशेष ध्यान रखा है, जो टीकाकार का एक आवश्यक गुण माना जा सकता है ।

हिन्दी में ही नहीं, प्रचीनकाल से, संस्कृत आदि प्राचीन भारतीय भाषाओं में भी किसी विषय या दृष्टि विशेष को लेकर अनेक कवियों की सूक्तियों का संग्रह करने की सामान्य प्रवृत्ति चली आ रही है । गोविन्द गिल्लाभाई ने अपनी साहित्यिक परम्परा के अनुकूल इस प्रवृत्ति का परिचय कुछ काव्य-संग्रह करके दिया है । उनके केवल दो काव्य संग्रहों को छोड़कर शेष सभी काव्य संग्रह प्राप्त नहीं होते । अतः उनके विषय में विशेष रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता । परन्तु जो काव्य-संग्रह उपलब्ध हैं तथा जिन काव्य-संग्रहों के शीर्षकों का उल्लेख मिलता है उनके आधार पर केवल इतना ही कहा जा सकता है कि गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा किए गए काव्य-संग्रह उसके कवित्व की व्याप्ति की सीमाओं से मुक्त नहीं है। आशय यह कि जिस प्रकार उनका कवित्व नीति विवेक तथा शृंगार की सीमाओं में आबद्ध है उसी प्रकार उनके द्वारा किए गए काव्य-संग्रह भी नीति तथा शृंगार परक ही है, अर्थात कवि की रुचि ही इन काव्य संग्रहों की निर्णायिका रही है । साहित्य चिन्तामणि जहाँ नीतिपरक काव्य संग्रह है, वहीं गोविन्द हजारा शृंगारपरक काव्य संग्रह होने के साथ-साथ एक शास्त्रीय ग्रन्थ भी है । इसमें उनके कवित्व, शास्त्रकार, टीकाकार तथा संग्रहकार रूपों के साथ-साथ शोध-कर्ता रूप के भी दर्शन हो जाते हैं, क्योंकि इसमें ऐसे अनेक प्राचीन हिन्दी कवियों की रचनाएँ संग्रहीत हैं तथा अनेक ग्रन्थों का उल्लेख आदि है, जिनके विषय

में हिन्दी के इतिहास ग्रन्थों में कुछ भी नहीं मिलता । आशय यह कि गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा किए गए काव्य-संग्रह उनकी रुचि पर ही आधारित हैं परन्तु उनका अनेक दृष्टियों से जो महत्व है उसे अस्वीकृत नहीं किया जा सकता ।

साहित्य-संपादन तथा प्रकाशन आधुनिक काल की ही प्रमुख विशेषता है । वैसे साहित्यकार के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के साथ इस प्रवृत्ति का कोई सैद्धान्तिक दृष्टि से अनिवार्य संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता, परन्तु आधुनिक-काल के प्रारम्भ से ही किन्हीं विशिष्ट कारणों से हिन्दी के प्रमुख कवियों तथा लेखकों को यह कार्य करना पड़ा । जिस प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई संपादन तथा प्रकाशन का कार्य करना चाहते थे उस प्रकार का कार्य वे किन्हीं कारणों से कर नहीं सके, क्योंकि जितने ग्रन्थों के प्रकाशन आदि का उन्होंने निश्चय किया था, उन सबको वे प्रकाशित नहीं कर सके, जिससे अनुमान किया जो सकता है कि कदाचित् आर्थिक कारणों से वे अपनी योजना पूरी न कर सके । परन्तु जितना भी कार्य उन्होंने इस दिशा में किया है वह अहिन्दी भाषी क्षेत्र में होने के कारण विशेष महत्व का है।

आधुनिक हिन्दी आचार्य की जो सर्वाधिक आधुनिक तथा महत्वपूर्ण विशेषता है, वह है, उसकी आधुनिक शोध दृष्टि । कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि प्राचीन आचार्यों में इस दृष्टि का नितान्त अभाव था परन्तु इतना निश्चित है कि जिस ऐतिहासिक तथा वस्तु परक दृष्टि का आग्रह आज के आचार्य में है वह नितान्त आधुनिक है, तथा उसका अपनी पूर्ण यथार्थता के साथ प्रथम दर्शन तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल में ही माना जा सकता है, परन्तु उसका प्रारम्भ भारतेन्दु युग में ही हो गया था ।

### इतिहास लेखन

इसी प्रकार आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखन के विषय में कोई प्रयास दृष्टिगोचर नहीं होता । हाँ, कुछ प्राचीन कवियों ने अपने पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख अवश्य किया, परन्तु विधिवत् हिन्दी साहित्य का इतिहास सर्व प्रथम एक फ्रांसीसी लेखक गार्स द तासी द्वारा सन् 1839 और 1846 में लिखा गया ।

हिन्दी के लेखकों में सर्वप्रथम श्री महेश दत्त शुक्ल का नाम लिया जा सकता है जिन्होंने अपने ग्रंथ 'भाषा काव्य संग्रह' - जो सं. 1930 में प्रकाशित हुआ था, में हिन्दी साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दिया है । इससे पूर्व राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द

ने हिन्दी भाषा के इतिहास के विषय में एक लेख अवश्य लिखा था, परन्तु उसमें साहित्य के इतिहास की चर्चा नहीं मिलती । सं. 1940 में शिवसिंह सेंगर ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ शिवसिंह सरोज प्रकाशित किया, जिसके आधार पर ग्रीयर्सन ने अंग्रेजी में अपना हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है, परन्तु विद्वानों ने हिन्दी साहित्य के प्रथम प्रमाणिक इतिहास के रूप में मिश्रबंधु विनोद को ही माना है, जिसके पश्चात् हिन्दी में तथा अन्य भाषाओं में हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथ लिखे गए हैं ।

गोविन्द गिल्लाभाई ने हिन्दी साहित्य का कोई इतिहास ग्रंथ नहीं लिखा है, परन्तु उनकी उपलब्ध सामग्री के अध्ययन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस दिशा में कुछ कार्य करने की उनकी योजना अवश्य थी, जो किन्हीं कारणों से पूरी नहीं हो पायी । गोविन्द गिल्लाभाई ने हिन्दी के प्राचीन साहित्य के विषय में जो शोध कार्य किया था, उसके आधार पर वे **भाषा कवि चरित्र** लिखना चाहते थे, जिसका अपूर्ण अंश बड़ौदा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के हस्तलिखित ग्रंथ संग्रह में सुरक्षित है । इसके अतिरिक्त विविध संग्रह ग्रंथों तथा **शिवसिंह सरोज** आदि पूर्व लिखित ग्रंथों में प्राप्त सामग्री भी अनेक तालिकाओं के रूप में प्राप्त हुई है, जिसके आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि गोविन्द गिल्लाभाई शिवसिंह सरोज या **मिश्रबंधु विनोद** के समान ही कोई इतिहास ग्रंथ लिखना चाहते थे ।

यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने **हिन्दी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास** के पूर्व भाग में इतिहास ग्रंथ के लेखन में अंतर्साक्ष्य के रूप में पचीस ग्रंथों का उल्लेख तालिका रूप में किया है, उसी प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक संग्रह ग्रंथों का विश्लेषण तालिका रूप में प्रस्तुत किया है तथा बीच में विशिष्ट कवियों या ग्रंथों के विषय में अपनी विशिष्ट शोधों या जानकारियों का उल्लेख किया है । अनेक स्थानों पर किसी कवि के विषय में कुछ भी ज्ञात न होने पर स्पष्ट लिख दिया है कि इस कवि के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं मिली है । इस प्रकार के अनेक स्फुट कागज पत्र मिले हैं, जिनमें उन्होंने हिन्दी के अनेक ज्ञात अज्ञात कवियों तथा उनकी रचना आदि के विषय में संक्षिप्त टिप्पणी लिखी हैं । इस समूची सामग्री के अवलोकन मात्र से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्लाभाई हिन्दी साहित्य के इतिहास को अपनी विशिष्ट योजना के अनुसार लिखना चाहते थे । **भाषा कवि चरित्र** तथा **भाषा कवियों नुं टुंक परिचय** इस नाम से प्राप्त स्फुट कागज पत्रों में इनके इतिहास का प्रारूप देखा जा सकता

है। आशय यह कि अपने युग की सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप गोविन्द गिल्लाभाई में हिन्दी साहित्य के इतिहास के विषय में न केवल जागरूकता मिलती है वरन् इतिहास लेखन की इच्छा तथा उसके अनुरूप इतिहास लेखन की योजना भी उनकी उपलब्ध सामग्री के आधार पर सिद्ध की जा सकती है । इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है, गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व में रीतिकालीन कवित्व तथा आचार्यत्व के साथ-साथ आधुनिक कालीन आचार्यत्व की भी अनेक प्रमुख विशेषताएं दृष्टिगोचर होती है ।

आचार्यत्व

गोविन्द गिल्लाभाई का आचार्यत्व कविता करने की इच्छा की पूर्ति के प्रयास में ही प्रारम्भ हुआ तथा कवित्व के विकास के साथ-साथ कवि के कृतित्व का यह पक्ष भी सतत् विकसित होता गया है । सिंहौर में आने वाले भाट चारणों तथा जैन साधु श्री पानाचंद जी के सहवास में काव्य के प्रति आकर्षित होने के साथ-साथ कवि में साहित्य स्वाध्याय की ऐसी इच्छा जागृत हुई कि जिसकी तुष्टि के लिए उन्हें विभिन्न स्रोतों से स्वाध्याय सामग्री के संचयन की आवश्यकता का अनुभव हुआ । प्रारम्भ में उन्हें स्वाध्याय के लिए अपेक्षित पुस्तकादि जैन साधु श्री पानाचंद जी से प्राप्त हो जाती थी, परन्तु आगे चलकर उन्हें सिहोर से बाहर भी प्रयास करने पड़े । इस प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई में पुस्तक संग्रह की प्रवृत्ति प्रारम्भ होती है। परन्तु यहाँ यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि इस प्रवृत्ति प्रारम्भ होती है । परन्तु यहाँ यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि इस प्रवृत्ति के मूल में केवल काव्य रचना की इच्छा मात्र नहीं थी, उस समय उनमें शास्त्र ज्ञान की भी प्रबल इच्छा उत्पन्न हो चुकी थी । एक स्थान पर उन्होंने अपनी प्रारम्भिक अवस्था में इस प्रकार के किए गए प्रयासों का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है, **'विद्वानों का प्रसंग ते विद्या पर विसेष रुचि, हुई और मित्रों पर प्रसंगोपात पत्र में कविता लिखने के लिए फुटकर दृष्टान्तिक और गूढ कूट तथा समस्या पहली आदिक कविता का संग्रह करने लगा, उनसे कविता पर बहुत प्रेम हुा । तब एक जैन साधु पानाचंद जी की पास जाय के कुछ पिंगल और नाममाला में नन्ददास कृत मान मंजरी और अनेकार्थ पढ़े । उनसे कुछ कविता करने में प्रवेश हुआ । तब जैसी तैसी कविता करने लगा और प्रथम गुजराती भाषा में विश्व दर्पण, कुधारा सुधारा की चढ़ाई और व्यभिचार निषेध बावनी, यह तीन ग्रंथ बनाय कें छपवाये वह देख के कितनेक पंडित मित्रों ने कहा कि तुम्हारी बुद्धि और तर्क शक्ति अच्छी है । इसलिए तुम काव्यशास्त्र के लक्षण ग्रन्थ पढ़ कें कविता करोगे तो बहुत उत्तम और**

मनोरंजक होयगो । यह सुनकें हम काव्य शास्त्र के लक्षण ग्रन्थ पढ़कें कविता करोगे तो बहुत उत्तम और मनोरंजक होयगो । यह सुनकें हम काव्य शास्त्र के लक्षण ग्रन्थ ढूंढने लगे परन्तु वह गुजराती भाषा में नहीं होने से हमको मिले नहीं । परन्तु संस्कृत और हिन्दी भाषा में वह हमने देखे इसलिए संस्कृत और हिन्दी भाषा के काव्य के लक्षण ग्रंथ प्रथम छपे हुए मुम्बई, बनारस, लखनऊ, बाँकीपुर और कलकत्ता आदिक नगरों से जितने मिले, तितने मंगवाय लिये और भाषा पढ़ना शुरू किया और ज्यों ज्यों भाषा कें कुच समझता गया त्यों त्यों जादे रस पाने लगा । उनसे उत्साह बढ़ा और विशेष सर्वोत्तम सर्व साहित्य के कितनेक ग्रन्थ जो आजतक नहीं छपे हैं ऐसे लिखाय के मंगाने का विचार किया और सारे हिन्द के कितनेक प्रख्यात स्थलों में से अति सिपारस तें और पत्रों लिख-लिख के भाषा काव्य के लभण ग्रन्थों लिखवाय लिखवाय कें मंगाये हैं ।' गोविन्द गिल्लाभाई के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनममें संग्रह करने की प्रवृत्ति प्रारम्भ से ही ती, जो आगे आवश्यकताओं के बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती गयी और स्वतंत्र रूप से शोध-प्रवृत्ति के रूप में विकसित हुई । काव्य-रचना में प्रवृत्त होने के साथ-साथ उनमें काव्य शास्त्र ज्ञान की इच्छा विशेष रूप से विकसित होती है जिसके परिणाम स्वरूप आगे चलकर उनमें शास्त्र रचना की प्रवृत्ति विकसित होती है तथा उनका शास्त्रकार आचार्यत्व अपना स्वरूप प्राप्त करता है । आशय यह कि गोविन्द गिल्लाभाई में साहित्य संग्रह, शोध तथा शास्त्र रचना की प्रवृत्ति लगभग एक ही समय प्रारम्भ होती है और आगे स्वतंत्र रूप से विकसित होती है ।

जिस प्रकार काव्य-रचना की इच्छा से प्रेरित स्वाध्याय के परिणाम स्वरूप गोविन्द गिल्लाभाई में आचार्यत्व के उक्त रूप विकसित हुए उसी प्रकार स्वाध्याय के परिणाम स्वरूप उनमें अनुवाद करने की प्रवृत्ति प्रारम्भ होती है । काव्य रचना तथा काव्य शास्त्र अध्ययन के लिए भी भाषा कोष पर पूर्ण अधिकार अत्यन्त आवश्यक होता है । इसलिए गोविन्द गिल्लाभाई को संस्कृत तथा हिन्दी के कोषों का गहन अध्ययन करना पड़ा था । आगे यह प्रवृत्ति केवल कोषों तक ही सीमिति न रही और उन्होंने अन्य विषयों के संस्कृत ग्रंथों का गुजराती अनुवाद भी प्रारम्भ कर दिया ।

कुछ हिन्दी-साहित्य-प्रेमी गुजराती नागरिकों के आग्रह पर गोविन्द गिल्लाभाई ने क्रमशः सं. 1945 तथा 1958 में **प्रवीण सागर** तथा **शिवराज भूषण** की गुजराती टीका लिखी हैं, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने आगे चलकर अन्य ग्रंथों की

गुजराती टीकाएं भी गुजरात की हिन्दी प्रेमी जनता को दृष्टि में रखकर की होगी तथा भिखारीदास जैसे हिन्दी के आचार्यों के समान अपने शास्त्रीय ग्रंथों की आवश्यकतानुसार हिन्दी टीकाएँ की होंगी।

गोविन्द गिल्लाभाई के आचार्यत्व के उक्त विभिन्न रूप कब किस प्रकार विकसित हुए इस विषय में तिथियों के निश्चित उल्लेख न मिलने के कारण, निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। केवल शास्त्रीय ग्रंथों तथा कुछ टीकाओं के रचनाकाल का उल्लेख मिलता है। अतः उन्हीं के आधार पर उनके आचार्यत्व के विकास क्रम के विषय में कुछ विचार किया जा सकता है।

**लच्छन बत्तीसी** गोविन्द गिल्लाभाई की प्रथम शास्त्रीय रचना है जो उन्होंने इक्कीस वर्ष की आयु में सं. 1926 में लिखी थी। यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि विवेक विलास के कुछ अंश तथा गुजराती काव्य रचनाओं को छोडकर शेष सभी काव्य कृतियाँ सं. 1937, या उसके पश्चात की हैं। आशय यह कि गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व के उक्त दोनों पक्ष-कवित्त एवं आचार्यत्व, बहुत कुछ सामानान्तर विकसित होते गए हैं। सं. 1945 में गोविन्द गिलाभाई सं.1945 में गोविन्द गिल्लाभाई ने भूषण मंजरी, शृंगार षोडशी तथा भक्ति कल्पद्रुम नामक तीन शास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन किया था। उसी समय उन्होंने अपनी प्रथम गुजराती टीका भी प्रवीण सागर पर लिखी थी। यह उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्लाभाई के उक्त तीनों शास्त्रीय ग्रंथों के विषय, रूपान्तर से प्रवीण सागर में भी आते हैं। भक्ति की शास्त्रीय चर्चा तो उनके द्वारा लिखित प्रवीण सागर में ही एक स्थान पर आयी हैं। अतः सम्भावना है कि उक्त तीनों ग्रंथों की रचना की प्रेरणा तथा कुछ सामग्री भी उन्हें प्रवीण सागर से प्राप्त हुई हो।

विशुद्ध काव्यशास्त्रीय विषयों पर ग्रंथ-रचना गोविन्द गिल्लाभाई ने सं. 1954 में प्रारम्भ की तथा जीवन के अन्तिम समय यह प्रवृत्ति निरन्तर चलती रही। इस बीच में उन्होंने अलंकारों तथा नायिका भेद के विषय में ही प्रधान रूप से लिखा है वैसे प्रारंगिक रूप से अन्य संबंधित विषयों की चर्चा भी की है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्लाभाई के आचार्यत्व का सूत्रपात तो बहुत पहले ही हो जाता है परन्तु वह सं. 1945 के पश्चात् ही प्रौढ़ता, पूर्णता तथा वैविध्य प्राप्त करता है। वस्तुतः यह बात उनके कवित्व के विषय में भी सत्य है। यह निश्चित रूप

से कहा जा सकता है कि उनके कृतित्व के दोनों रूप-कवित्व तथा आचार्यत्व, बहुत कुछ समानान्तर रूप से विकसित होते हैं तथा एक के विषय ने दूसरे के विषय को भी प्रभावित किया है । उदाहरणार्थ **शृंगार सरोजिनी** में उद्दीपन के रूप में षट्ऋतु-वर्णन नामक ग्रंथ की रचना एक दूसरे की पूरक सिद्ध होती है । दोनों का रचना-काल क्रमशः सं. 1965 तथा 1966 है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व के उक्त दोनों रूप उनके कृतित्व में विभेद के परिचायक न होकर, एकता के परिचायक हैं । वस्तुतः उनका समूचा कृतित्व विशुद्ध साहित्यिक ही था । उक्त भेद अध्ययन के सौकर्य के हेतु किए गए हैं, जो प्रकारान्तर से उनके कृतित्व की व्यापकता सिद्ध करते हैं ।

प्रकाशन तथा संपादन की प्रवृत्ति भी गोविन्द गिल्लाभाई में बहुत पहले ही से दृष्टिगोचर होती है । सं. 1925 में उन्होंने अपनी प्रथम गुजराती रचना **विश्व दर्पण** का प्रकाशन किया था जिसके पश्चात् उन्होंने अपनी तथा अन्य कवियों की कई रचनाओं का संपादन तथा प्रकाशन किया है । परन्तु इतना निश्चित है कि दिशा में जितना कार्य वे करना चाहते थे उतना न कर सके । गोविन्द गिल्ला भाई ने जिन-जिन ग्रन्थों का संपादन तथा प्रकाशन किया था, वे सभी प्राप्त नहीं होते । अतः इस विषय में विशेष कुछ कहा नहीं जा सकता ।

गोविन्द गिल्लाभाई एक आचार्य कवि थे जिन्होंने काव्य के तत्वों की मीमांसा करते हुए लक्षण ग्रंथों का सृजन किया था । यह उनके आचार्यत्व की ही गरिमा थी कि उन्होंने विपुल साहित्य की सृष्टि करते हुए भी अनुवाद, संकलन, सम्पादन, समालोचना आदि से सम्पन्न शोध तथा संयोजन का कार्य भी किया था जो उस समय अन्यत्र नहीं किया जा रहा था । उनके सम्पादन में सहायक अन्यान्य और भी बहुत से कार्य थे जिससे उन्हें अपने सम्पादन कार्य में सहायता मिलती थी, जैसे -

- टीका ग्रंथों का निर्माण
- अनुवाद कार्य
- सम्पादन कार्य

**टीका ग्रंथों का निर्माण -**

गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक टीका ग्रंथों का सृजन किया था, जिससे उनके अध्ययन गाम्भीर्य का संकेत मिलता है ।

टीका लिखने की परम्परा तथा टीका टिप्पणी लिखने की परम्परा भारतीय साहित्य में अत्यन्त प्राचीन काल से मिलती है । संस्कृत में यह परम्परा विशेष रूप से विकसित हुई तथा कुछ विषयों जैसे व्याकरण आदि में तो यह परम्परा मौलिक ग्रन्थों में भी अधिक विकसित मिलती है । इसीलिए विद्वानों ने टीका साहित्य को संस्कृत में मौलिक साहित्य से भी अधिक विशाल माना है । संस्कृत की स्थापन्न भाषा बनने के साथ-साथ हिन्दी में भी यह परम्परा मध्यकाल में प्रारम्भ हो जाती है, जो आज तक विकसित होती चली आ रही है । आधुनिक काल में टीका का अर्थ तो वही है जो प्राचीन काल में मिलता है परन्तु टिप्पणी शब्द का अर्थ कुछ बदल गया है । आजकल टिप्पणी शब्द का प्रयोग बहुत कुछ अंग्रेजी शब्द नोट्स के अर्थ में होता है ।

गोविन्द गिल्लाभाई ने प्राचीन अर्थ में टीका और आधुनिक अर्थ में टिप्पणी दोनों ही लिखी हैं । टीकाएँ उन्होंने अपने तथा अन्य प्राचीन कवियों के ग्रन्थों की लिखी हैं, पर टिप्पणी केवल अपने ही कुछ ग्रन्थों में आवश्यकतानुसार कहीं-कहीं दी हैं । उन्होंने टीका और टिप्पणी दोनों ही हिन्दी और गुजराती भाषा में लिखी हैं । गुजरात के अनेक हिन्दी कवियों ने हिन्दी की अनेक रचनाओं को गुजराती टीकाएँ लिखी हैं और कुछ प्रकाशित भी हुई हैं । गोविन्द गिल्लाभाई ने भी गुजरात के हिन्दी कवि किशन की **'किशन वावनी'**, महेरामण सिंह कृत **'प्रवीण सागर'** की गुजराती टीकाएं लिखी हैं, तथा प्रकाशित की हैं । इसी प्रकार हिन्दी के प्रसिद्ध कवि भूषण की शिवराज भूषण रचना से चुने हुए सौ छंदों को गुजराती टीका के साथ शिवराज शतक नाम से संवत् 1971 में प्रकाशित किया है । गोविन्द गिल्ला भाई ने भूषण के शिवराज भूषण पर भी गुजराती टीका लिखी थी, परन्तु उसे वे प्रकाशित न कर सके थे, परन्तु उसकी एक प्रति प्राप्त हुई है । इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने कुछ ग्रन्थों जैसे **प्रबोध पचीसी** पर हिन्दी टीका लिखी है, और **वक्रोक्ति विनोद, श्लेष चन्द्रिका गोविन्द हजारा** आदि रचनाओं में आंशिक हिन्दी टीका और टिप्पणी लिखी हैं । **बोध बत्तीसी प्रारब्ध पचासा, विष्णु विनय पचीसी, परब्रह्म पचीसी और प्रबोध पचीसी** नामक रचनाओं पर गुजराती टीकाएं भी लिखी है । इसी प्रकार कुछ और रचनाओं की कुछ हस्तलिखित प्रतियों में हिन्दी गुजराती टिप्पणी मिल जाती हैं ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने रीतिकाल की परम्परा के अनुसार टीकाएं लिखी हैं तथा आधुनिक अर्थ में टिप्पणी । परन्तु उनके कृतित्व का वैशिष्ट्य

इस बात में है कि उन्होंने गुजराती और हिन्दी दोनों भाषाओं में यह सब लिखा है, साथ ही अपने तथा अन्य कवियों के ग्रन्थों पर भी टीकादि लिखी हैं ।

गोविन्द गिल्ला भाई की टीकाओं के विषय में यह बात विषय रूप से उल्लेखनीय है कि इनकी गुजराती टीकाएं कहीं-कहीं केवल अनुवाद बन गयी है क्योंकि इनकी दृष्टि टीकाओं में प्रधानतः अर्थ पर ही रही है, परन्तु हिन्दी टीकाओं मे सर्वत्र यह बात नहीं मिलती। विशेष कर शास्त्रीय ग्रन्थों में जैसे **वक्रोक्ति विनोद, श्लेष चंद्रिका** आदि में कवि ने छंदों के अर्थ को स्पष्ट कर उनमें लक्षण उदाहरण के तारतम्य को भी स्पष्ट किया है । कहीं-कहीं इस प्रकार के शास्त्रीय विवेचन को उन्होंने अलग से विवेचन या टीका नाम दिया है ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई की टाकाएँ सामान्यतः हिन्दी में लिखी जाने वाली टीकाओं के समान ही हैं, उन्हें संस्कृत की टीकाओं की कोटि में परिगणित नहीं किया जा सकता, परन्तु उनकी टिप्पणियों में आधुनिकता की छाप अवश्य दृष्टिगोचर होती है ।

**गोविन्द गिल्ला भाई का अनुवाद कार्य** - हिन्दी में संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओं के ग्रंथों के अनुवाद करने की परम्परा मध्यकाल से ही मिलने लगती है, परन्तु भारतेन्दुकाल के आते-आते यह प्रवृत्ति अधिक वेगवती हो जाती है । इस काल में हिन्दी के अनेक लेखकों ने संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं से अनेक ग्रन्थों का अनुवाद किया है । गोविन्द गिल्ला भाई ने भी अपने युग की इस प्रवृत्ति के अनुसार संस्कृत के करीब 13 ग्रन्थों का अनुवाद किया है, जिसमें से **अमरू शतक और चौर पंचाशिका** को छोड़ कर शेष सभी ग्रन्थ शास्त्रीय ग्रन्थ हैं । परन्तु ये सभी अनुवाद गुजराती में हैं साथ ही सभी अनुवाद पूर्णतः प्राप्त भी नहीं हैं अतः हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी के लिए गोविन्द गिल्ला भाई के अनुवाद कार्य का विशेष महत्व नहीं माना जा सकता । इसलिए उसके विषय में यहाँ विचार नहीं किया जा रहा है । हाँ, गोविन्द गिल्ला भाई का अनुवाद कार्य उनके कृतित्व की व्यापकता तथा वैशिष्ट्य का परिचय अवश्य माना जा सकता है ।

**गोविन्द गिल्ला भाई का संग्रह कार्य** - प्राचीन काल से भारतीय साहित्य में ऐसे संग्रह ग्रन्थ मिलने लगते हैं जिनमें विषय के साम्य आदि किसी सिद्धान्त के अनुसार अनेक कवियों की रचना संग्रहीत की जाती हैं । भारतीय साहित्य का आदि ग्रन्थ ऋग्वेद संहिता भी इसी प्रकार का संग्रह है, संस्कृत के आचार्यो ने भी मुक्तक काव्य के विवेचन के प्रसंग में इसी

प्रकार के संग्रह ग्रन्थों की चर्चा है । हिन्दी में भी इस प्रकार के संग्रह ग्रन्थों की प्रचीन परम्परा मिलती है । हिन्दी में **कालिदास हजारा** विशेष रूप से प्रसिद्ध है, यद्यपि और भी अनेक संग्रह प्रसिद्ध हैं तथा कुछ प्रकाशित भी हुए हैं । एक स्थान पर गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने संग्रह ग्रन्थों के साथ साथ हिन्दी के अनेक संग्रह ग्रन्थों की सूची दी है, जिसे यहाँ उसी रूप मे उद्धृत किया जा रहा है, क्योंकि उनमें से अनेक संग्रह ग्रन्थ हिन्दी मे अब तक एक अज्ञात ही है, साथ ही उससे हिन्दी संग्रह ग्रंथों की परम्परा तो स्पष्ट हो ही जाएगी, गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा किए गए शोध कार्य का भी कुछ परिचय मिल जाएगा ।

**संग्रह ग्रंथों के नाम**

कवि चरित्र के लिए जिन ग्रंथों में अनेक कवियों की कविता है वह संग्रह ग्रन्थों के नाम नीचे लिखते हैं :

| क्रम | ग्रंथ का नाम | कवि संख्या | छपा या लिखा | संग्रह कर्ता का नाम |
|---|---|---|---|---|
| 1 | साहित्य सिंधु | 91 | लिखा हुआ | वेनी दास |
| 2 | शृंगार सिन्धु | 50 | लिखा हुआ | भगवानदास |
| 3 | कवित्त रत्नामालिका | 99 | लिखा हुआ | रसराशि रामानारायण जयपुर |
| 4 | गोविन्दानन्दघन | 87 | लिखा हुआ | रसिक गोविन्द |
| 5 | अलंकार आशय | 66 | लिखा हुआ | उत्तमचंद्र, जोधपुर |
| 6 | कवि दर्पण | 26 | लिखा हुआ | ग्वाल |
| 7 | कवि वल्लभ | 13 | लिखा हुआ | हरिचरनदास |
| 8 | नखशिख | 41 | लिखा हुआ | नाम नहीं है |
| 9 | सरस रस | 17 | लिखा हुआ | लाल कवि आगराउ |
| 10 | अलंकार रत्नाकर | 63 | लिखा हुआ | दलपत वंशीधर |
| 11 | अनुमत भूषण | 24 | लिखा हुआ | सरदार, बनारस |
| 12 | हिन्दी भाषा के फुटकर कवित्त संग्रह | 156 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 13 | ब्रजभाषा के फुटकर कवित्त संग्रह | 120 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 14 | गोविन्द हजारा | 141 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |

| क्रम | ग्रंथ का नाम | कवि संख्या | छपा या लिखा | संग्रह कर्ता का नाम |
|---|---|---|---|---|
| 15 | साहित्य चिन्तामणी | 225 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 16 | प्रेम प्रभाकर | 65 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 17 | कवि और कविता भाग-I | 415 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 18 | कवि और कविता भाग-II | 200 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 19 | गुनमाला के पुस्तक में | 40 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 20 | वज्रश्चकोपनिषद बारे पुस्तक में | 65 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 21 | जसराज बावनी बारे पुस्तक में | 40 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 22 | छूटक काव्य संग्रह बारे पुस्तक में | 83 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 23 | हर्षजी मेहता कृत काव्य संग्रह बारे पुस्तक में | 40 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 24 | शुकरंभा बारे पुस्तक में | 15 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 25 | कविनामावली, जोधपुर | 760 | लिखा हुआ | मुंशी देवी प्रसाद |
| 26 | कविनामावली, सिंहोर | 2317 | लिखा हुआ | गोविन्द गिल्ला भाई |
| 27 | शृंगार संग्रह | 125 | छपा हुआ | नवलकिशोर प्रेस सरदार कवि,काशी |
| 28 | शृंगार सुधाकर, कवित्त | 187 | छपा हुआ | काशी, मन्नालाल द्विज कवि |
| 29 | सुन्दरी सर्वस्व, सवैया | 108 | छपा हुआ | काशी, मन्नालाल द्विज कवि |
| 30 | शृंगार सरोज, दोहा | - | छपा हुआ | काशी, मन्नालाल द्विज कवि |
| 31 | सुधासर, वृन्दावन | - | छपा हुआ | काशी, नवीन कवि |
| 32 | सुन्दरी तिलक | 70 | छपा हुआ | काशी, हरिश्चन्द्र द्वारा मन्नालाल |
| 33 | रस कुसुमकर | 90 | छपा हुआ | प्रताप सिंह जा द्वारा अयोध्या में |
| 34 | हफीजुला खां का हजारा | 261 | छपा हुआ नवल किशोर प्रेस | हफीजुला खॉ |
| 35 | षट्ऋतु हजारा | 222 | छपा हुआ, नवलकिशोर प्रेस | प्रभानन्द सुहाने |
| 36 | नखशिख हजारा | 160 | छपा हुआ, नवलकिशोर प्रेस | प्रभानन्द सुहाने |
| 37 | राजरसनामृत | - | छपा हुआ, कलकत्ता | देवी प्रसाद |

| क्रम | ग्रंथ का नाम | कवि संख्या | छपा या लिखा | संग्रह कर्ता का नाम |
|---|---|---|---|---|
| 38 | कवि रत्नमाला, प्र. भा. | - | छपा हुआ, कलकत्ता | देवी प्रसाद |
| 39 | मनोज मंजरी, प्र. भाग | 51 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 40 | मनोज मंजरी, द्वि. भाग | 95 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 41 | मनोज मंजरी, तृ. भाग | 71 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 42 | मनोज मंजरी, च. भाग | 57 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 43 | विज्ञान मार्तण्ड | 34 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 44 | वीरोल्लास | 54 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 45 | भडौआ संग्रह प्रथम खण्ड | 68 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 46 | भडौआ संग्रह द्वितीय खण्ड | 62 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 47 | भडौआ संग्रह तृतीय खण्ड | 24 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 48 | भडौआ संग्रह चतुर्थ खण्ड | 61 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 49 | शृंगार चंद्रिका | 41 | छपा हुआ, भारतजीवन प्रेस काशी | नकछेदी तिवारी |
| 50 | भक्त माला टीका | 152 | छपा हुआ, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ | प्रियादास |
| 51 | कवि वचन सुधा | - | छपा हुआ, भारत जीवन प्रेस, काशी, | हरिशचन्द्र |
| 52 | पावस भूषण | 50 | छपा हुआ, आगरा | घनश्याम |
| 53 | पावस संग्रह | - | छपा हुआ, काशी | हरिश्चन्द्र |
| 54 | पावस प्रमोद | 50 | छपा हुआ, मथुरा | नानकचन्द |
| 55 | मनोरंजन संग्रह | 102 | छपा हुआ, कानपुर | गौरीशंकर |
| 56 | माधव विलास | 65 | छपा हुआ, लखनऊ | माधव प्रसाद |
| 57 | काव्य कला हरिश्चन्द्र | 51 | छपा हुआ, बांकीपुर, पटना | साहब प्रसाद |
| 58 | काव्य शिरोमणी | 55 | छपा हुआ, आगरा | कुंदनलाल |
| 59 | रसिक मन्जरी | 55 | छपा हुआ, आगरा | कृष्णलाल |
| 60 | काव्य संग्रह पंचांग | 22 | छपा हुआ, काशी | गंगा सुत |
| 61 | काव्य संग्रह | 90 | छपा हुआ, वेंकटेश्वर, बम्बई | गोवर्धन |
| 62 | काव्य रत्नाकर | 59 | छपा हुआ, वेंकटेश्वर, बम्बई | बनवारीलाल |
| 63 | काव्य कलामिनी | -- | छपा हुआ, लखनऊ | सीताराम |
| 64 | शिशिर सुषमा | 18 | छपा हुआ, मथुरा | ----- |

| क्रम | ग्रंथ का नाम | कवि संख्या | छपा या लिखा | संग्रह कर्ता का नाम |
|---|---|---|---|---|
| 65 | शिवसिंह सरोज | -- | छपा हुआ, लखनऊ | शिवसिंह सेंगर |
| 66 | कवि कीर्ति कलानिधि | -- | छपा हुआ, काशी | नक्छेदी तिवारी |
| 67 | सुजान सरोज | 91 | छपा हुआ, लखनऊ | सुजान कवि |
| 68 | गोपी प्रेम पीयूष | -- | छपा हुआ, मथुरा | नवनीत |
| 69 | ऊधो गोपी शतक | 20 | छपा हुआ, आगरा | घनश्याम |
| 70 | सभाविलास | 14 | छपा हुआ, लखनऊ | ----- |
| 71 | मनोरंजन काव्य | 21 | | |
| 72 | प्रेम तरंग | -- | छपा हुआ, काशी | ----- |
| 73 | समस्यापूर्ति संग्रह | -- | छपा हुआ, काशी | ----- |
| 74 | काशी कवि समाज की समस्यापूर्ति-प्रथम भाग | 38 | छपा हुआ, काशी | मन्नालाल |
| 75 | समस्यापूर्ति-द्वितीय भाग | 50 | छपा हुआ, काशी | राव माता प्रसाद |
| 76 | समस्यापूर्ति-तृतीय भाग | 54 | छपा हुआ, काशी | राव माता प्रसाद |
| 77 | समस्यापूर्ति-चतुर्थ भाग | 38 | छपा हुआ, काशी | राव माता प्रसाद |
| 78 | काशी कवि मण्जल की पूर्ति | -- | छपा हुआ, काशी | गोस्वामी कन्हैयालाल |
| 79 | पटना कवि समाज की पूर्ति | -- | छपा हुआ, काशी | गोस्वामी कन्हैयालाल |

गोविन्द गिल्लाभाई भाई द्वारा तैयार की गई उक्त संग्रह ग्रंथों की तालिका से स्पष्ट है कि उन्होंने प्रस्तुत तालिका अपने कवि चरित्र के लिए बनाई थी, अतः उसमें सभी प्रकार के काव्य संग्रहों की नामावली दे दी गई है । परन्तु इससे इतना स्पष्ट अवश्य हो जाता है कि हिन्दी में काव्य संग्रहों को प्रकाशित करने की प्रवृत्ति विशेष रूप से थी । इसीलिए गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक काव्य संग्रह तैयार किए थे । प्रस्तुत तालिका में गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने करीब 14 संग्रहों का उल्लेख किया है । परन्तु अन्यत्र उन्होंने अपने तीन काव्य संग्रहों **गोविन्द हजारा, साहित्य चिन्तामणि** और **प्रेम प्रभाकर** का ही उल्लेख किया है, जिनमें से केवल प्रथम दो ही उपलब्ध हैं । **गोविन्द हजारा** और **साहित्य चिन्तामणि**

के विषय में कृति परिचय के प्रसंग में विस्तार से विचार किया जा चुका है, और उन ग्रंथों में आए कवियों की नामावली भी अलग से दी जा चुकी है । ग्रंथ के विषय तथा उसमें उद्धत रचनाओं के कवियों तथा उनकी रचनाओं की सूची भी कवि ने उक्त तालिका के साथ ही एक अन्य पृष्ठ पर दी है । अतः उस रचना के विषय में किसी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती । शेष संग्रह ग्रंथों के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता ।

गोविन्द गिल्लाभाई के उपलब्ध काव्य संग्रहों तथा प्राप्त सामग्री के अध्ययन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ये काव्य संग्रह उनकी शोध प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही निष्पन्न हुए थे । गोविन्द गिल्लाभाई की शोध प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप उन्होंने जहाँ ये काव्य संग्रह तैयार किए हैं वहीं हिन्दी के अनेकानेक कवियों और उनकी रचनाओं के विषय में अत्यधिक सामग्री संग्रहीत की है ।

गोविन्द गिल्लाभाई के उक्त काव्य संग्रहों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि ये काव्य संग्रह उनके कवित्व और आचार्यत्व के अतिरिक्त विस्तार है । उनके कवित्व के अध्ययन के प्रसंग में स्पष्ट किया जा चुका है कि शृंगार और नीति काव्य अपेक्षाकृत अधिक सफल एवं प्रौढ़ कवित्व के परिचायक हैं । इसीलिए इन दोनों काव्य प्रकारों का ही दर्शन इनके काव्य में होता है । उसी प्रकार **गोविन्द हजारा और प्रेम प्रभाकर** के मूल में उनकी शृंगार प्रियता दृष्टिगोचर होती है । **गोविन्द हजारा** एक प्रकार से गोविन्द गिल्लाभाई के आचार्यत्व के स्वरूप का परिचायक भी है इसीलिए उसमें काव्यशास्त्र के विविध विषयों का विवेचन भी संग्रह के साथ-साथ मिलता है । गोकुल कवि के दिग्विजय भूषण तथा रस कुसुमाकर जैसे ग्रन्थों के समान गोविन्द हजारा काव्य संग्रह के साथ-साथ काव्यशास्त्र का ग्रंथ भी है । हिन्दी में इस प्रकार के काव्य संग्रह मिलते हैं, जिनके मूल में कोई एक ही विषय जैसे नायिका भेद, षट ऋतु वर्णन आदि ही हैं । गोविन्द गिल्लाभाई ने उक्त दोनों प्रकार के काव्य संग्रह तैयार किए हैं, जो उनके आचार्यत्व वैशिष्ट्य के प्रबल प्रमाण माने जा सकते हैं, क्योंकि हिन्दी के अधिकांश आचार्यो ने इस प्रकार का प्रयास नहीं किए । अतः गोविन्द गिल्लाभाई का आचार्यत्व रीतिकालीन और आधुनिक आचार्यो की तुलना में अधिक व्यापक एवं विशिष्ट कहा गया है ।

**गोविन्द गिल्लाभाई का शोध कार्य** - शोध आधुनिक आचार्यो की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है । यद्यपि प्राचीन आचार्य शोध प्रवृत्ति शून्य नहीं कहे जा सकते, परन्तु जिस अर्थ

में आज शोध शब्द का प्रयोग होता है, उस अर्थ में शोध कार्य आधुनिक काल से पूर्व नहीं मिलता । गोविन्द गिल्लाभाई जैसे मूलतः विशुद्ध रीतिकालीन आचार्य में शोध की आधुनिक एवं वैज्ञानिक प्रवृत्ति विरोधाभास-सी लगती है । परन्तु जिस प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई ने शोध कार्य किया है, उससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि वे हिन्दी के उन गिने चुने शोधकर्ताओं में से हैं जिनकी शोधों पर आधुनिक हिन्दी की शोध संहिता आधारित है ।

हिन्दी की शोध परम्परा आज दिन प्रतिदिन विकसित हो रही है, परन्तु हिन्दी का कोई भी शोध छात्र शिवसिंह सेंगर, मिश्रबन्धु जैसे हिन्दी के आदि शोध कर्ताओं को नहीं भुला सकता, इसी प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई को भी कभी नहीं भुलाया जा सकता । मिश्र बन्धु विनोद में मिश्रबन्धुओं ने गोविन्द गिल्लाभाई की शोधों को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उनके भूषण के शुद्ध संस्करण के प्रकाशन की प्रशंसा की है । परन्तु दुख का विषय है कि गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा संग्रहीत समस्त शोध सामग्री आज उपलब्ध नहीं है । फिर भी उनके कागज-पत्र प्राप्त हुए हैं उससे उनके कार्य का अनुमान ही लगाया जा सकता है और उनके जो कृतित्व के इस पक्ष के विषय में कल्पना की जा सकती है ।

गोविन्द गिल्लाभाई की शोधों के विषय में दो दृष्टियों से विचार किया जा सकता है - 1. शोध के क्षेत्र में उन्होंने क्या किया, 2. शोध के क्षेत्र में वे क्या करना चाहते थे ।

शोध के क्षेत्र में गोविन्द गिल्लाभाई ने जो कुछ किया है, उसके विषय में यही कहा जा सकता है कि उन्होंने विभिन्न स्थानों की यात्रा करके और हिन्दी के विभिन्न कवियों तथा लेखकों से पत्र-व्यवहार करके, हिन्दी के प्राचीन साहित्य को संग्रहीत किया था और हिन्दी के प्राचीन कवियों के विषय में जितनी संभव हो सकी उतनी जानकारी एकत्रित की थी । गोविन्द गिल्लाभाई अपनी इन शोधों के आधार पर हिन्दी के प्राचीन साहित्य को प्रकाशित करता चाहते थे तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास के रूप में हिन्दी कवि चरित्र लिखना चाहते थे ।

गोविन्द गिल्लाभाई ने कितनी सामग्री एकत्रित की होगी इसका अनुमान तो मिश्र-बन्धुओं के इस कथन से ही लगाया जा सकता है गोविन्द गिल्लाभाई ने उनके पास जो हिन्दी कवियों और लेखकों की विवेचना सहित जो वृहद सूची भेजी थी उससे उनको प्रायः 500 आज्ञात लोगों का पता चला था । गोविन्द गिल्लाभाई के जो स्फुट कागज-पत्र मिले हैं उनमें

भी पचास-साठ कवि सूचियाँ हैं, जिनमें सहस्रों कवियों के नाम उनकी रचनाओं के नाम तथा संक्षिप्त परिचय दिए गए हैं । इसके अतिरिक्त **कवि चरित्र** नाम से कुछ कागज हैं जिनमें अकारादि क्रम में हिन्दी के 74 कवियों का परिचय आदि दिया गया है । **'भाषा कविन के टूक जीवन चरित्रों'** नामक एक गुजराती लेखमाला में हिन्दी के अनेक कवियों का जीवन और कृति परिचय दिया है । इस प्रकार एक छोटी-सी पुस्तिका में तालिका रूप में 134 कवियों की उन रचनाओं का विवरण दिया गया जो गोविन्द गिल्लाभाई के पास थी और प्रकाशित नहीं हुई थी । गोविन्द गिल्लाभाई ने एक स्थान पर **बिहारी सरतई** की 31 टीकाओं का उल्लेख किया है जो गोविन्द गिल्लाभाई के पास थीं और प्रकाशित नहीं हुई थीं । उन टीकाओं का विवरण उन्हीं के शब्दों में यहाँ उद्धृत किया जा रहा है:

1. **बिहारी सतसई की संस्कृत गद्य टीका,** कवि नाम नहीं मिलता है ।
2. **आर्या गुम्फ,** यह आचार्यों में संस्कृत पद्य टीका, पंडित हरि प्रसाद कृत ।
3. **शृंगार सप्तशतिका,** बिहारी की संस्कृत दोहा में और गद्य में टीका, भाषा गद्य परमानन्द कृत ।
4. **जुल्फकार खाँ कृत सतसइ की टीका,** दिल्लीपति जहाँदार शाह के दीवान, मीरुलउमरा नसरत जंग ।
5. **प्रबंध घटना,** राजा गोपाल शरण कृत, सं. 1771 में ।
6. **अनवर चंद्रिका,** नवाब अनवर खाँ के नाम से शुभकरन कवि ने बनाई, सं. 1771 में ।
7. **साहित्य चंद्रिका,** कवि करण भट्ट भाट, पन्ना के राजा हृदयशाहि के सभा में 1737 में विद्यमान ।
8. **रघुनाथ कृत टीका,** काशी के बन्दीजन् काशीराज के पास थे ।
9. **रसचंद्रिका,** नवाब ईसवी खाँ कृत नरवरगढ़ के राजा छत्रसिंह के लिए सं. 1809 में रची ।
10. **हरिप्रकाश,** हरिचरणदास कृत ।
11. **लाल चन्द्रिका,** लल्लूलाल जी ।
12. **कानविन चित्र चन्द्रिका,** काशी वासी सरदार कृत ।
13. **बिहारी की टीका** यूसफ खाँ कृत ।

14. **बिहारी टीका,** राम रामवृक्ष शिरमौर के राजा की सभा में था ।

15. **बिहारी की टीका,** वैद्यक टीका, छोटूराम कृत वैद्यक अर्थ में सब दोहा ।

16. **बिहारी टीका देवकीनन्दन टीका,** कवि ठाकुर कृत सं. 1861 में रचि, वामें सतसई बनने का कारण लिखा है ।

17. **बिहारी टीका** प्रभुदयाल पाण्डे कृत सं. 1953, कलकत्ता बंगवासी आफिस से प्रकाशित ।

18. **बिहारी रत्नाकर** ।

19. **अमर चन्द्रिका,** भाषा पद्य, सूरति मिश्र कृत ।

20. **बिहारी टीका कविताबद्ध,** कृष्ण कवि कृत ।

21. **बिहारी टीका** पठान सुलतान के कुंडलियों में कवि चंद्र कृत ।

22. **उपसतसैया** कवि गंगाधर कृत कुण्डलिया ।

23. **रस कौमुदी,** अयोध्या के बाबा जानकी प्रसाद कृत ।

24. **सतसई शृंगार** अपूर्ण, हरिश्चन्द्र कृत कुण्डलिया ।

25. **बिहारी सुमेर,** खंडित, बाबा सुमेर सिंह कृत 40 कुण्डलिया ।

26. **बिहारी टीका** जोखूराम कृत, कुण्डलिया पाँच दस हैं ।

27. **बिहारी बिहार,** व्यास अम्बिका दत्त कृत कुण्डलिया ।

28. ग्रेयर्सन साहब का **सतसई संस्कृत भाषा गद्य** ।

29. **बिहारी टीका** रणछोर जी दीवान, जूनागढ़ ।

30. **बिहारी टीका** कल्याण कवि कृत ।

31. **बिहारी टीका** जैन मानसिंह कृत, उदयपुर ।

गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा उल्लिखित बिहारी सतसई की टीकाओं की नामावली में से कई टीकाऐं ऐसी हैं, जो हिन्दी के विद्वानों में अज्ञात हैं या अल्प ज्ञात । इस प्रकार स्पष्ट ही है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने हिन्दी भाषी प्रदेश से बाहर रहते हुए भी, जो इस दशा में कार्य किया है, वह अपने आप में महत्वपूर्ण है । उनके द्वारा संग्रहीत सारी सामग्री आज उपलब्ध है, वह उनके कृतित्व के इस पक्ष के उद्घाटन के लिए पर्याप्त है ।

गोविन्द गिल्लाभाई के शोध कार्यों के विषय में विचार करते समय यह बात विशेष

रूप से उल्लेखनीय है कि उन्होंने जो भी शोध कार्य किया है वह एक सुनिश्चित योजना के अनुसार किया है, साथ ही शोध की वस्तुपरक वैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्राविधि का अनुसरण किया है, जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि गोविन्द गिल्लाभाई के प्राचीन साहित्य के प्रकाशन के साथ-साथ हिन्दी के साहित्य का इतिहास **कवि चरित्र** के रूप में लिखना चाहते थे। उन्होंने यह कार्य प्रारम्भ कर दिया था, हिन्दी के कवियों की वृहद् सूची उन्होंने तैयार कर ली थी तथा उन कवियों का जीवन चरित्र आदि उन्होंने अकारादि क्रम में प्रारम्भ किया था। परन्तु ये विवरण अपूर्ण ही मिलते हैं। गोविन्द गिल्लाभाई हिन्दी के प्राचीन कवियों की रचनाओं को प्रकाशित करना चाहते थे, यह बात उनकी डायरी के उन पृष्ठों से सिद्ध होती है, जिनमें उन्होंने हिन्दी की कुछ रचनाओं के मुद्रण आदि के व्यय का पूरा-पूरा ब्योरा लिखा है। इतना ही नहीं वरन् **किशन बावनी**, भूषण की **शिवराज शतक** आदि रचनाऐं भी प्रकाशित की हैं, अतः उनकी शोधों के मूल में वर्तमान उनके प्रयोजन के विषय में किसी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती।

आगे व्याकरण आदि के विवेचन के प्रसंग में गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा तैयार किए गए कोष्टक तथा तालिका आदि के विषय में संकेत किया जा चुका है कि उन्होंने जो भी कार्य शोध के क्षेत्र में किया, बड़ा ही व्यवस्थित था तथा विश्लेषणात्मक था। उनकी डायरी आदि में स्थान-स्थान पर तालिका आदि देखी जा सकती हैं जो यही सिद्ध करती हैं। इसी प्रकार एक स्थान पर उन्होंने शिवसिंह सरोज का विश्लेषण किया है, जिसमें सर्वप्रथम आकारादि क्रम में शिवसिंह सरोज में आए हुए कवियों की नामावली दी गई है फिर उन कवियों की नामावली दी गई है जिनकी कविता नहीं है, फिर कवियों की रचनाओं की सूची दी गई है तथा अन्त में पुनरावलोकन शीर्षक के नींचे उन्होंने ग्रन्थों का वर्गीकरण किया है और भाषा कोष के ग्रन्थ, भाषा पिंगल ग्रन्थ भाषा नायिका भेद के ग्रन्थ भाषा नायिका भेद के ग्रन्थ, नवरस के ग्रन्थ, अलंकार ग्रन्थ, काव्य ग्रन्थ, संग्रह ग्रन्थ, व्यंग्य के ग्रन्थ, चित्रकाव्य के ग्रन्थ, दूषण ग्रन्थ, दूती ग्रंथ, भाषा दूषण की टीका, कवि प्रिया की टीका, रसिक प्रिया की टीका, रसराज की टीका, सतसई नामक ग्रन्थ, बिहारी की टीका, नखशिख के ग्रन्थ के रूप में उनका वर्गीकरण कर उनकी भिन्न-भिन्न सूची दी गई हैं। ये सूचि अब हिन्दी के शोधकर्ताओं के लिए अत्यन्त महत्व की वस्तु हैं।

यहाँ यह बात विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा संग्रहीत समूची सामग्री अत्यन्त विश्वसनीय है, क्योंकि एक तो सर्वत्र उन्होंने, आधुनिक शोध प्रबन्धों के

समान अपनी जानकारी का मूल स्रोत लिख दिया है, या कोई अन्य प्रमाण दिया है तथा जहाँ उन्हें किसी विषय के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है, स्पष्ट लिखा दिया है कि हमें इस विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है । कवि चरित्र में इस प्रकार के उल्लेख स्थान-स्थान पर आते हैं । इसी प्रकार अपनी हस्तलिखित प्रतियों के विषय में जहाँ लिखा है वहाँ स्पष्ट कर दिया है कि उस प्रति में कितने पृष्ठ हैं या किस विषय की कितनी चर्चा है । एक स्थान पर **'साहित्य सिन्धु नामक ग्रन्थ ना वारमां' तरंग मां प्ररम्भ मां मान जनित विप्रलम्भ ती नथी । तेमा त्रणे मान, मान मोचन, कलहंतारिता नायका, शाप जनित विप्रलम्भ, प्रवास हेतुक विप्रम्भ, प्रवत्सत्पतिका, द्वादशमास प्रोषितपतिका, विरह नी दश दशा, संतऋतु होली, इत्यादिक नथी, पण ग्रीष्म ऋतु ना सवैया 147 मां थी छे । त्यार पछी तरंग 25 मां अन्योक्ति वर्णन छे तेमा स्थावरान्योक्ति मां प्रथम हिमालय अने मेरु नी अन्योक्ति छे । ते सुवर्णान्योक्ति ना छप्पय थी नथी । त्याथी ग्रन्थ अपूर्ण छे ।** (साहित्य सिन्धु ग्रन्थ की बारहवीं तरंग में प्रारम्भ में मान जनित विप्रलम्भ, प्रवास हेतुक विप्रलम्भ, प्रवत्सत्पतिका, द्वादशमास प्रोषित पतिका, विरह की दस दशा, बसंत ऋतु होली इत्यादिक नहीं है । परन्तु ग्रीष्म ऋतु के सवैया 147 से हैं । इसके बाद तरंथ 25 में अन्योक्ति वर्णन है उसमें स्थावरान्योक्ति में हिमालय और मेरु की अन्योक्ति हैं और सुवर्णान्योक्ति के छप्पय से नहीं है । इसके बाद ग्रन्थ अपूर्ण है ।) साहित्य सिन्धु के इस वर्णन के बाद उन्होंने इसी प्रकार अलंकार कलानिधि, रामसिंह मुखारविन्द, मकरन्द काव्यरत्न, मंडन कृत काव्य सरोज, श्रीपति कृत हनुमत भूषण, प्रस्तार प्रभाकर, फाजल अली प्रकाश, दूषण भ्रान्ति भंजनी आदि ग्रन्थों की प्रतियों का विवरण है । इस प्रकार स्पष्ट है कि इतना पूर्ण विवरण कल्पना पर आधारित नहीं हो सकता है, अतः गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा संग्रहीत सामग्री अत्यन्त विश्वसनीय मानी जा सकती है ।

गोविन्द गिल्लाभाई के स्फुट कागज-पत्रों में यत्र-तत्र हिन्दी के प्राचीन ग्रंथों की विस्तृत सूचियाँ मिलती हैं, उससे भी अनेक अज्ञात ग्रंथ प्रकाश में आ सकते हैं तथा कुछ विवाद ग्रस्त कृतियाँ मिलती हैं, उससे भी अनेक अज्ञात ग्रंथ प्रकाश में आ सकते हैं तथा कुछ विवाद ग्रस्त कृतियों से सम्बन्धित विवाद समाप्त हो सकते हैं । उदाहरणार्थ सूर के कूट पदों और उनकी सरदार कृत टीका आज तक हिन्दी के विद्वानों के बीच एक विवाद का विषय है। गोविन्द गिल्लाभाई ने एक स्थान पर न केवल सूर के कूट पदों और उनपर सरदार कवि की टीका का उल्लेख किया है परन्तु उनकी निश्चित पद संख्या भी दी है तथा उनके प्रकाशन

में कितना खर्च उस समय लग सकता था उसका भी उल्लेख किया है। इस प्रकार इस उल्लेख के आधार पर सूर के कूट पदों और उन सरदार कवि की टीका के अस्तित्व पर अविश्वास नहीं किया जा सकता। गोविन्द गिल्ला भाई के संग्रह की जो सामग्री मिली है उसमें और उनके उल्लेखों में भी एकरूपता तथा समानता मिलती है।

अतः गोविन्द गिल्लाभाई की सामग्री जिस रूप में भी आज उपलब्ध है, हिन्दी शोध की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व का यह पक्ष हिन्दी के शोध छात्रों तथा विद्वानों के लिए आदर्श सिद्ध हो सकता है।

गोविन्द गिल्लाभाई की शोध सम्बन्धी समूची सामग्री का परिचय या अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। अतः उनके कृतित्व के इस पक्ष के संक्षिप्त परिचय के आधार पर उनके कृतित्व का महत्व सिद्ध किया गया है, जिसका आज के युग में बड़ा मूल्य है।

**गोविन्द गिल्लाभाई का सम्पादन आदि कार्य** - आधुनिक हिन्दी आचार्यो की रीतिकालीन आचार्यो से भिन्न सिद्ध करने वाली यह बड़ी विशेषता है कि उन्होंने साहित्यिक ग्रंथों का सम्पादन कर, उनकी भूमिका आदि के रूप में उनकी साहित्यिक समीक्षा भी की है। गोविन्द गिल्लाभाई ने गुजरात में रहते हुए भी यह कार्य किया है तथा अपने ग्रन्थों के प्रकाशन के साथ-साथ हिन्दी के अन्य कवियों की रचनाओं का भी प्रकाशन किया है। भूषण के ग्रन्थ के प्रकाशन एवं सम्पादन के विषय में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अभिमत पहले उद्धृत किया जा चुका है, इसी प्रकार उनके अन्य प्रकाशनों और सम्पादन कार्यो के विषय में भी कहा जा सकता है। गोविन्द गिल्लाभाई ने बहुत पहले ही अपनी रचनाओं तथा अन्य कवियों की रचनाओं का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आगे प्रकाशन और सम्पादन वे करना चाहते थे, नहीं कर सके। कुछ रचनाएँ जैसे शिवराज भूषण, ढोला मारू नी वार्ता, आदि ऐसी हैं, जिनका सम्पादन कार्य उन्होंने कर लिया था परन्तु प्रकाशन कार्य वे पूरा न कर सके।

गोविन्द गिल्लाभाई ने जिन ग्रन्थों का प्रकाशन एवं सम्पादन किया है, उनकी भूमिका भी लिखी है जिसमें उन्होंने रचना के लेखक तथा उसकी कृति आदि के विषय में विस्तार से विचार किया है तथा उनके विषय में विभिन्न विद्वानों के मतों को उद्धृत कर उनकी समीक्षा की है, और अपना स्वतन्त्र मत व्यक्त किया है। इस दृष्टि से शिवराज शतक की उनकी भूमिका देखी जा सकती है, जिसमें उन्होंने मिश्रबन्धु के मत की समीक्षा की है।

इतना ही नहीं वे गुजराती की कुछ मासिक पत्र-पत्रिकाओं में भी इसी प्रकार के विवेचनात्मक लेख आदि लिखा करते थे ।

यहाँ हमारा विशेष ध्यान विवेच्य विषय सम्पादन-प्रदान पर केन्द्रित है, गोविन्द गिल्लाभाई ने जब हिन्दी में यह सम्पादन कार्य सम्पन्न किया तब उनका यह प्रयास हिन्दी साहित्य में नगण्य ही हुआ था, सम्भवतः गोविन्द गिल्लाभाई ने प्रथम बार ही इस प्रकार के प्रयास करके हिन्दी में सम्पादन कला को विकास के मार्ग पर प्रशस्त किया था ।

**सम्पादन वैशिष्ट्य**

गोविन्द गिल्लाभाई ने हिन्दी साहित्य के अमूल्य और महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थों का मात्र संकलन ही नहीं किया था, वरन् इन्होंने उन ग्रन्थों के आज के मानद मूल्यों पर व्यवस्थित रूप से सम्पादित करके इन्हें पूर्ण जिज्ञासा वृत्ति, अनुसंधान कार्य, अध्ययन, सम्पर्क यात्राएं और परिश्रम आदि सभी का समन्वय रहता था । उनकी जिज्ञासा वृत्ति ग्रन्थ की पुष्पिका में उनके सहज उदगारों से ही प्रगट हो जाती है जैसे - एक ग्रंथ की पुष्पिका में कवि लिखते हैं -

**'विक्रम संवत् 1956 का श्रावण सुदी-2, शनिवार के दिन सिहोर में चहुआन रजपूत कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने यह देवमाया प्रवंच नाटक कवि देव कृत भरतपुर के महाराज के पुस्तकालय में से मोरबी के महाराज कुमार श्री हरभम जी साहब मारफत मंगवाय कें, उन प्रति पर से यह प्रति स्वार्थे स्वहस्ते लिखि कें पूरन की है ।'**[6]

एक अन्य ग्रन्थ की पुष्पिका में कवि लिखते हैं -

**'विक्रम संवत् 1956 असाड़ सुदी - 13 मंगलवार के दिन सिंहोर में चहुआन राजपूत कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने यह 'वधु विनोद' ग्रन्थ कालीदास कृत भरतपुर के महाराज के पुस्तकालय में से मोरबी के महाराज बरभम जी साहब मारफत मंगाय के उन प्रति पर से यह प्रति स्वार्थे स्वहस्ते लिख के पूरन की है ।'**[7]

उपर्युक्त उद्धरणों से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि कवि गोविन्द गिल्लाभाई अपनी साहित्य प्रवृति के कारण राजा-महाराजाओं में भी चर्चित तथा सम्मानित थे । वह अपने इन विशिष्ट सम्बन्धों के द्वारा ही दुर्लभ पांडुलिपियाँ प्राप्त करन में समर्थ थे और फिर स्वयं ही उसकी प्रतिलिपि भी तैयार करते थे ।

दूसरी बात यह भी सामने आती है कि उन्होंने किसी अर्थलाभ या किसी अन्य प्रलोभन के कारण प्रतिलिपियाँ सम्पादित नहीं कीं, वरन् स्वार्थे, स्वहितार्थ अर्थात स्वयं की साहित्य पुष्टि के लिए, स्वयं के उपयोग के लिए ही उन्होंने ये सब ग्रंथ सम्पादित किए थे, इसके पीछे किसी निहित स्वार्थ की भूमिका नहीं थी ।

तीसरी बात यह कि गोविन्द गिल्लभाई पांडुलिपि से प्रतिलिपि करते समय अत्यधिक सावधान रहते थे । उस समय व्यावसायिक लिपिकार जिन्हें **लिखिया** कहा जाता था, वे निश्चित छन्द लेखन की दर से पारिश्रमिक लेकर प्रतिलिपियाँ तैयार करते थे जिनके अक्षर बहुत सुन्दर होते थे किन्तु जिन्हें भाषा-साहित्य का पर्याप्त ज्ञान नहीं होता था, इसलिए प्रतिलिपि में पाठभेद तथा वर्तनी की त्रुटियाँ रह जाती थीं । गोविन्द गिल्लाभाई इस तथ्य से अवगत थे, इसीलिए महत्वपूर्ण ग्रन्थों के सम्पादन में प्रतिलिपि वह स्वयं सावधानी पूर्वक तैयार करते थे । इस प्रक्रिया में उन्हें किसी का विश्वास नहीं था । यही कारण है कि उनके द्वारा तैयार की गई प्रतिलिपियाँ प्रामाणिक एवं आधिकारिक होती थीं ।

**मूल प्रति की पुष्पिका**

गोविन्द गिल्लाभाई जब ग्रन्थ सम्पादित करते थे तब मूल प्रति की पुष्पिका में कोई छेड़ छाड़ नहीं करते थे, उसे यथावत ही उतार देते थे और स्वयं के नाम का भी उसमें उल्लेख नहीं करते थे, यह उनकी लेखकीय ईमानदारी थी, जैसे -

**'इति श्री मत्सकल महिमंडला खण्डल खण्ड मण्डली विद्वडन निपच्छमषंडन प्रचंड मारतंड प्रताप ताप त्रै-हरन शरनागत सषे सषे सदेसदेशाधिनाथ गन सेवित सरेससाम राज्य सुख पूरनचंद वंसावसंत श्रीमन्महाराजाधिज कर्म सिंह कुलमंडनगरीवनिवाज महाराजेश्वर श्री श्री श्री श्री महाराजा नरेन्द्र सिंह आजानिगानिनः चन्द्रशेखरकृत रसिक विनोद समाप्तः ।। सुसंमिति।।'**[8]

कहीं-कहीं राजघराने के प्रतिष्ठित सदस्यों के द्वारा भी साहित्य के ग्रंथों की सृष्टि होती थी, उसमें जो भी पुष्पिका होती थी प्रतिलिपि पांडुलिपि में भी उसे उसी रूप में अंकित कर दिया जाता था, यथा -

**'इति श्री महाराज कुमार श्रीयुत लाल श्री मकरध्वज सिंह जू देव तस्यातमज श्रीयुत श्री लाल रणधीर सिंह जू देवात्मज श्री लाल जी ज्वाला प्रताप सिंह जू देव स्थापन्न (कोटा) सिंहरोली कृत रामत्रय स्तोत्र समाप्त ।'**[9]

प्राचीन पोथियों में कहीं-कहीं दो प्रकार की पुष्पिकाएं भी प्राप्त होती हैं, जिनमें प्रथम पुष्पिका मूलग्रंथाकार द्वारा जोड़ी गई होती थी, जैसे -

'इति श्री कामनिवास जो विश्वरूप चरित्र प्रसंग संपूर्ण भयौ । कवीसुर के वचन

॥ दूहा ॥

श्री कायथ नीगम कुलहि, तन बिच नुर भुजदास ।
नेमो ग्रन्थ रसाल सु, श्रोता रसिक नबास ॥
ग्रंथ संपूरन अनँग को, जो कोऊ पढ़ै सुजान ।
बाके मन की भावना, सो हरि पूरे तान ॥

दूसरी अतिरिक्त भूमिका इसी के साथ संलग्न है, यथा -

इति श्री मधुमालती कामविलास कथा संपूर्ण ।

समाप्तं । श्रीरस्तु । कल्याणरस्तु । शुभं भवतु । सवत् 1843 ना वर्षे शाके 1708 प्रवर्तमान्ये । मासोत्तम शुभकारी कार्तिक मासे । कृष्णपक्षे । तीथौ द्वादसी । भृगुबासरे । लिषितं रावल गंगाराम । पाठनार्थ ठाकुर कुंवर जी । श्री बांकानेर ग्रामे ग्रन्थाग्रन्थ संख्या 1900011 ॥

यदि पुस्तकं दृष्ट्वा, तातृशं लिखितं मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥[10]

इन्हीं पुष्पिकाओं की परम्परा में कुछ दोहा छन्द लोकोक्ति के रूप मे भी प्रचलित हो चुके थे, जो गोविन्द गिल्लाभाई ने यथावत प्रतिलिपियों में अंकित किये हैं यथा -

पोथी प्यारी प्रान सौं, हर हिय का कौ हार ।
जीव जतन करि राखजो, पोंथी से तो प्यार ॥[11]
श्रोता पाठक सांभलो, नामा भट नो शीस ।
कर जोर सांमलभट कहै, जैजै श्री जगदीश ॥[12]

जो गुजराती लिपिकार हिन्दी के ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तैयार करते थे, वे पुष्पिका में वर्तनी की गलतियों के लिए इस प्रकार क्षमा-याचना भी करते थे -

' इति श्री मदनमोहन नी वार्ता सम्पूर्णः । संवत् 1912 ना द्वितीया आषाढ़वदी बारहवी ए लिखित । श्री केवलचंद गोविन्दजी आत्म हेतु श्री बंकपुरी मध्ये लिपिकृत ।

ए वार्ता माहे कोइक अदको उषो अक्षर लखाणे होय तो पंच नी साखे माफ करज्यों

जी ।'[13] एक अन्य पुष्पिका में श्लोक में 1 श्लोक इस प्रकार है -

लग्न दृष्टि करीयीश, वृहदृष्टि रतो मुखम् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ॥[14]

कहीं कहीं ग्रंन्थाकार ने विस्तृत पुष्पिका में आश्रयदाता तथा ग्रन्थ प्रेरक का पूरा परिचय देते हुए ग्रंथरचना के संदर्भ में पूरी जानकारी प्रस्तुत की है, यथा-

यह रसाव मंजरि सहित, शतक मलिंद सुहाय ।
विजय पोश प्रथेश को, अर्पन कियौ बनाय ॥
चातुर परम पवित्र मन, कमधज विरद निवाह ।
महाराव पृथ्वीसिंह पर, विजय नगर नर नाह ॥
वंश केशरी सिंह तिहि, मंत्री रजवट वीर ।
धीर वीर शोभासदन, गाहक गुन गंभीर ॥
माधव पद अरविन्द कौ, मधुकर परम सुजान ।
न्याय सुधाकर धर्म निधि, माधवलाल दिवान ॥
पृथ्वी सिंह नृपाल कौं, रसल दार सरदार ।
शोभित सिंह किशोर सम, यह किशोर निरधार ॥
प्रिय सेवक भूषन ताज हैं, कृष्णलाल कविराज ।
कवि कुल भूषन ताज हैं, कृष्णलाल कविराज ॥
महाराज पृथ्वीसिंह कौ, यह समाज बहुभाग ।
सक्रक सुमन सुवास मय, बन्यौ बाग अनुराग ॥
रसलदार इक दिवस कह, सुकवि नियम सासीन ।
कीजै रसिक विनोद हित, दोहा रसिक नवीन ॥
ताते यह कवि गोप मुख, प्रभु इच्छा अनुसार ।
पृथ्वीसिंह नृप नेह बस, बन्यौ मलिंद बिहार ॥[15]

इसी प्रकार सहज और सामान्य पुष्पिकाओं में लिपिकार अपना उल्लेखभर ही करके ग्रंथ समाप्त कर देता है । यथा -

**'लिखितं श्री गोकुल मध्य, लिखिया गोरधन दास तथा लाला रामचन्द ने यह**

**पुस्तक लिखी । ठिकानौ श्री गोकुल मध्ये श्री जीवन जी महाराज की हवेली के पास जो वैष्णव बाचै सुनै तिन कौ हमारे जय श्री कृष्ण ।। तथा श्री वल्लभदेवजू कौं दंडवत् ।।'**[16]

कुछ पुष्पिकाओं में प्राथमिक तथा सत ही सूचनाएं ही होती हैं किन्तु इस प्रकार की सूचनाओं के आधार पर पाठभेद हेतु अन्य पाडुलिपियाँ के प्राप्त करने में सहायता मिलती है तथा कृति एवं कृतकार के विषय में भी मार्गदर्शन प्राप्त होता है - इसी प्रकार की एक पुष्पिका देखिए :

**'इति श्री महाप्रभु के तथा श्री गुसाई जी के सेव्य तथा सातो स्वरूपन के सेव्य सो जी सुरलीधर जी महाराज तथा श्री माधोराय जी महाराज तथा श्री काकाजी महाराज तथा श्री रणछोड़ जी महाराज आदि प्रचीन आचार्यन के मुख ते वचनामृत सुने प्रमाण लिखे हैं । श्री पुरुषोतमजी महाराज आत्मज श्री रमणलाल जी कृत सुभमस्तु । श्री कृष्ण शरणंमम । यह मंत्र सदा जपत रहनौ मिती फूल वदी - ।। बुधवार मावस्या ।।'**[17]

कहीं कहीं लिपिकार या ग्रंथकार संवेदनशील होकर भाषा के प्रति अपने स्नेह को इस प्रकार व्यक्त करता है -

सुर भाषा ते अधिक है, ब्रजभाषा सों हेत ।
ब्रजभूषन जाकों सदा, मुख भूषन कर लेत ।।[18]

कहीं कहीं अन्तर्साक्ष्य के रूप में इन्हीं पुष्पिका विवरणों से ग्रंथकार के वैयक्तिक जीवन के विषय में भी अछूती जानकारी प्राप्त हो जाती है । यथा -

सालिगरामी सरजु की मिली गंग की धार ।
अन्तराल में देस है, सोसारन सरकार ।।
परगन्ना गोआ जहाँ, छपरा गाम निहार ।
तहाँ कवित पितु जानियै, महासुभग ससुरार ।।
हरि कवि कौ मातुल तहाँ, बहै सु विद्या दान ।
श्री सुकदेव तनै लखो, चक्रपान गुन खान ।।

संवत अंठारा सौ विते, तापर चौतींस जान ।
पूरन गुरु दसमी दिये, कीन्हों ग्रंथ महान ॥[19]

गोविन्द गिल्लाभाई ने इन पुष्पिकाओं से प्राप्त सूचनाओं का पर्याप्त उपयोग किया था तथा अपने संपादित ग्रंथों में ये जानकारियां भी जोड दी थी ।

**अतिरिक्त सूचनाएं एवं विज्ञप्तियाँ :**

जहाँ प्रसंग किसी ऐसे कवि का आता है जो किसी विशिष्ट दरबार में आश्रयी रहा है तो कवि ने उस आश्रय के विषय में आश्रयदाता के विषय में भी यथाप्राप्त जानकारियाँ देने का यत्न किया है । साथ में यदि उस ग्रन्थ का आधार या उसके छन्द अन्य किसी ग्रन्थ में प्राप्त हुए हैं, तो कवि ने उसका भी उल्लेख किया है । जैसे कवि पदमाकर के 'अलिजा प्रकाश' के संदर्भ में कवि ने स्पष्ट किया है कि यही ग्रन्थ अन्यत्र **जगत विनोद** के नाम से जाना जाता है , यह कोई अतिरिक्त दूसरा ग्रन्थ नहीं है ।

**आलिजा प्रकाश का ग्रंथारम्भ :**

महाराज माधव तनय, नृपमनि दौलत राउ ।
साहिब सिन्ध्या कुल कलश, दया दान दरियाउ ॥
सोवत सेज फनिन्द की, तब तें सुचित गुविंद ।
जग ज्यावन जब ते भयौ, दौलत राव नरिन्द ।
दौलत आली जाह नृप, हुकुम कियौ नहि नेहु ।
आलीजाँह प्रकाश यह सरस ग्रंथ करि देहु ॥
दौलत आलीजेंह कौ, हुकुम पाप सविलास ।
कवि पदमाकर करत हैं, आली जांह प्रकाश ॥

**'जगत विनोद'**

ग्रन्थ के अन्त में लिखा है -

महाराज माधव तनय, नृपमनि दौलत राव ।
साहिब सिन्ध्या कुल कलस, दयावान दरियाव ॥
सोबत सेज फनिन्द की, तब ते सुनित गुविंद ।
जग ज्यावन जब ते जग्यौ, दौलत राव नरिन्द ॥
दौलत नृप के हुकुम ते, सहि अति हियैं हुलास ।
कवि पदमाकर ही कियौ, आलीजांह प्रकाश ॥

इस प्रकार एक ही ग्रंथ आरंभ में आश्रयदाताओं की भिन्नताका उल्लेख करके आगे एक जैसा ही -लिपिबद्ध हुआ है । सम्पादक की खुली दृष्टि से यह भेद बच नहीं पाया है और यही सम्पादन की जागरूकता गोविन्द गिल्लाभाई में लक्षित होती है ।

इसी बंध में आलीजहाँ के विषय में गोविन्द गिल्लाभाई ने सम्राट अकबर का परिचय भी यथाप्राप्त सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत किया है -

**अकबर :** अकबर शाह का जीवन चरित्र जग प्रख्यात है; अकबर नामा में /तवकात अकबरी में/तवारीख अबदुल्ला दरबदाउनी में/आदि जो जो ग्रंथ फारसी में है और उनका अंग्रेजी में अनुवाद भी हो गया है, तैसे हिन्दी, बंगला, मराठी और गुजराती आदि का अनेक देसी भाषाओं में भी हिन्दी के बादशाहों की तवारीख बनाई हैं । जो मदरसों में बालकों को पढ़ाई जाती है । जिसे सब लोग जानते हैं । इसलिए यहाँ कुछ जरूरत नहीं है । किन्तु यह महाप्रतापी बादशाह हिन्दी भाषा के भी कवि थे इसलिए हम इनको कवि श्रेणी में गिन के इनका कुछ हाल कवि तरीके से लिखना चाहते हैं ।

दिल्ली का राज्य छूटने के बाद हुमायुं की बेगम हामिदा के पेट से अकबर शाह का जन्म हुआ । सिंध में अमरकोट गांव में आपका जन्म हुआ था । ता. 14मी. अकटोबर सन् 1542 के दिन में हुए ।

फिर मां बाप के साथ आप काबुल गए । वहॉ से सन 1555 के जुलाई मास में आकर फिर दूसरी बार दिल्ली का राजा हुमायुं और अकबर से प्राप्त किया । इसके बाद ता. 24मी जनवरी सन् 1556 के दिन हुमायु बादशाह जन्मतनशीन हुए । उस समय अकबर तेरह बरस चार महिने के थे । उन्हीं ने श्री मुहम्मद जलालुद्दीन अकबर शाह नाम धारण करके दिल्ली की गद्दी हासिल की थी और अपने पिता के विस्वास पात्र बजीर बेहरम खान का खानखालान की पदवी देकर मुख्य बजीर बना दिया । और अपना ईलाही नाम से सम्वत् चलाया ।

अकबर शाह ने अनेक देशों में अच्छे अच्छे पंडितों और मौलवियों को बुलाकर अपना आश्रय दिया और समयानुसार उनसे धर्म चर्चा करते रहे । इलाही वर्ष दसवे में सन् 1575 में राजमंदिर के बाग में एक बड़ा इबादत खाना बनाया जिसमें बैठक के लिए भेरभाग (एवान) दिया था । एक खण्ड में बडे बडे सैयदों के बैठने के लिए तो दूसरे खण्ड में पंडितों

के (उपला के लिए) आसन थे । तीसरा खण्ड शेख, मौलवियों के लिए और चौथा खण्ड शाशकों कवियों के लिए बनाया था । उसमें हर शुक्रवार की रात में आकर बादशाह बैठते थे और बार बार हर खण्ड में जाकर मुलाकात करते थे और सबको यथायोग्य उपहार भी देते थे ।

बादशाह की धर्म पर आस्था जानकर देश परदेश से बहुत से साधु सन्यासी और फकीर आते थे । उन सभी को खाने पीने और रहने के लिए दो अन्नक्षेत्र बनाए गए थे । हिन्दू साधुओं के लिए जो क्षेत्र था उसका नाम 'धर्मपुर' था । उसमें शिवरात्रि में बहुत से जो भी महात्मा आते थे, उन सभी के साथ बादशाह बहुत स्नेह से बात करते थे और अनेक धर्मो का धर्म पुस्तकों का भाषान्तर भी फारसी में करवाते थे । इनमें महाभारत रामायण गीता उपनिषद आदि कितने ही ग्रन्थ हिन्दू धर्म के भी थे ।

सभी धर्मो का रहस्य जान के आपने एक नया धर्म चलाया था उसका नाम 'तोहिद इलाही' रखा गया था, इसलिए कितने ही धर्माध मुस्लमान उनसे बहुत जलते थे, और बादशाह की निन्दा भी करते थे ।

बादशाह को अपने धर्म पर अनास्था और नए धर्म को चलाने के कारण उनके मित्र शेख फैज और अबुल फजल जो बड़े विद्वान थे । उनके सहयोग से हुआ होगा । क्योंकि ये दोनों भाई सूफी (वेदांत) मत के महापंडित थे ।

अकबर की सभा के सभी सभासद महापंडित और कवि थे । उनमें 1- शेख फैजी 2-अबुल फजल, 3-राजा बीरबल, 4-राजा मानसिंह, 5-राजा टोडरमल, 6-तानसेन, 7-पं. जगन्नाथ, 8-गंगकवि, 9-अब्दुल कादर वदांयूनी आदि मुख्य थे । ये अकबर के नवरत्नों में गिने जाते थे ।

अकबर के दरबार में बहुत से कवि आते जाते रहते थे, इनमें कितने ही प्रसिद्ध थे, इनमें गंग, नरहर आदि मुख्य थे । उस समय हिन्दी भाषा में कौन कौन कवि कविता करते थे उनके नाम इस सवैया में लिखे हैं :

पूरवी, प्रसिद्ध, पुरन्दर, ब्रह्म, सुधारस अमृत अमृतवानी ।
गोकुल, गोप, गोपाल, गनेश, गुनी, गनसागर गंग सुज्ञानी ।
जोध जगन्नज में जगदीश, जगामग जैत जगन्त हे जानी ।
कोर अकब्बर सैन कशी, इतने मिलिकें कविता जु बखानी ।।

इनके अतिरिक्त सूरदास जी, उनके पिता बाबा रामदासजी, गुसाई तुलसीदास जी,

केशवदासजी, दोलराज, करन, आलम, आदि अनेक कवि उस समय में थे । अकबर शाह अपने कवि मंडल में बैठकर निरंतर काव्य चर्चा करते थे, और बहुत बार काव्यपूर्ति के लिए आप स्वयं एक पद बनाकर अन्य कवियों को पूरा करने के लिए दिया करते थे । जैसे -

- शंभु कौं पूजन नागिन आई ।
- डूबत हस्ति हथेरी के पानी ॥
- किंहिं कारन हालत डोल में पानी ।
- किहिं कारन सुन्दरि हाथ जरी ।
- लाला दर-सीना दाग जु दारद ॥

इत्यादि अनेक समस्यापूर्तियाँ अकबर के समय की प्रख्यात हैं और उनकी अच्छे चमत्कार के साथ गंग, बीरबल आदि कवि पूर्तियाँ किया करते थे । और अकबर शाह स्वयं भी अच्छी कविता करते थे । इनका रचा कोई ग्रंथ तो नहीं है किन्तु फुटकर कवित्त कितने ही मिलते हैं उनमें से थोड़े से नमूने के तौर पर लिखे हैं - (कुछ कवित्त हैं)

यह सिवाय 'अक्कबर' नाम ले किंवा आज्ञा से फारसी और संस्कृत में कितने ही ग्रन्थ बने हैं, उनमें संस्कृत भाषा में रचे ग्रंथोंके नाम इस प्रकार हैं -

1. पारसी प्रकाश (व्याकरण) बिहारी कृष्ण दास कृत
2. फारसी प्रकाश (कोष) कृष्णदास कृत
3. श्रृंगार दर्पण (नायिका भेद) अलंगार श्रंगार रस में
4. प्राकृत समसेतु (मूल-कालिदास कृत उसकी टोका-अकबर कृत पत्र-276)[20]

इस प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई अपने सम्पादन दायित्व के निर्वाह में अनेक अलभ्य सूचनाएँ तथा दुर्लभ जानकारियाँ भी प्रस्तुत की हैं जो उनकी सम्पादन कला की स्तरीयता और अध्ययन शीलता को प्रमाणित करता है ।

**पाठ शुद्धि :**

पाठ शुद्धि हेतु गोविन्द गिल्लाभाई ने दो मार्ग अपनाये थे । प्रथम तो एक ही मूल ग्रन्थ की यथा प्राप्त प्रतिलिपियां तैयार करके फिर पाठ मिलान करके आधिकारिक पाठ प्रस्तुत किया, दूसरे प्रयास में उन्होंने स्वयं पाठ शुद्धि करके एक सहज प्रक्रिया का निर्वाह किया ।

जहाँ उन्होंने स्वयं पाठ शुद्धि औचित्य विवेक और व्याकरण के आधार पर किया है, वहां उन्होंने पुष्पिका में इसे स्वीकार कर लिया है । यथा -

वासी पुर सिंहोर के, गोविन्द सुकवि सुजान ।
प्रेम सहित यह ग्रंथ, उन कीनौ सुद्ध विधान ॥[21]

गोविन्द गिल्लाभाई स्वयं कवि थे इसलिए उन्होंने अधूरी काव्य कृतियों की छन्द पूर्तियाँ करके उन्हें सम्पूर्ण भी किया था प्रवीण सागर जो अहिरावण सिंह द्वारा प्रवीण अपूर्ण प्रबंध काव्य था, उसकी अंतिम तो तरंगे गोविन्द गिल्लाभाई ने ही पूर्ण की थी । कवि ने अन्यान्य ग्रंथों में ही ऐसा ही प्रयास किया था जो कुछेक ग्रंथों की पुष्पिका में भी इस का स्पष्ट उल्लेख किया है । यथा -

जस पावै या जगत में, छत न सकै पुनि कोय ।
सीखे नीति विनोद के, नीति निपुन नर होय ॥
केते कविन पुरातनी, केते ऊधुना लीन ।
केते कवित बनाय के हमने घरे नवीन ॥
यामैं होवैं चूक तो, लीज्यो सुकवि सुधार ।
विनय बलित कर जोर कैं, गोविन्द कहत गुहार ॥
देस काठियावाड़ में, सुन्दर ग्राम सिंहौर ।
वामे बसत सदाय हम, कुटुंब युक्त कर ठौर ॥
संवत शर षट नंद शशि सावन मांहि समोद ।
गोविंद ने पूरन कियौ, निरमल नीति विनोद ॥[22]

गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा संकलित एवं संपादित गोविन्द हजारा ग्रंथ में अपनी बहुज्ञता, शोध परक अनुशीलन तथा अपने साहित्य ज्ञान एवं पंडित्य का पूरा परिचय दिया है, इसी गोविन्द हजारा की पुष्पिका में वह कहते हैं -

विमल विसाल देस काठिया सुवाड़ तामै,
सुन्दर सिहौर पुर ओपत अपारा है ।
वाही में बसत हम स्वजन सहित सदा,
गीताभाई नंद नाम गोविंद हमारा है ।
संवत् उन्नीस सौ पिचत्तर के सासन में,

सावन सुकुल पक्ष पूर्ण सोम मारा है,
गोविन्द करत तब संकलित सर्व करी,
पूरन प्रकास कियौ गोविन्द हजारा है ।।[23]

'प्रवीण सागर' के विषय में उनकी सम्पादन शैली लीक से हटकर रही है, उन्होंने कवि महिरावण सिंह जी कृत प्रवीणसागर के पाठ को व्यवस्थित की बारह लहरें स्वयं रचकर उस ग्रन्थ को सम्पूर्ण भी किया ।

गोविन्द गिल्लाभाई का इस संदर्भ में प्रारंभिक वक्तव्य ध्यातव्य है -

**'काठियावाड़ देशान्तर्गत् राजकोट के ठाकुर साहब ने सात मित्रों ने मिलकर संवत् 1838 में एक आशक-माशूक का सर्वविद्यामय 'प्रवीण सागर' नामक ग्रन्थ बनाना शुरु किया, और 72 लहरें (अध्याय) तक बनया । वहाँ राजा का देहांत हो गया, तातें ग्रंथ अपूर्ण हर गया । वह विक्रम संवत् 1945 में हमने अंत की (12) बारह लहरें बनाय कें ग्रंथ पूर्ण किया और बाकी गुजराती भाषा में 'गोविन्द सुबोधिनी नाम की टीका ।'**[24]

यह सम्पादन शैली उनकी विशिष्ट थी, इसका मुख्य कारण यही था कि गुजरात में महाकाव्य ग्रन्थों का निर्माण बहुत कम हुआ था, गोविन्द गिल्लाभाई चाहते थे कि इस ग्रन्थ का पूर्ण करके एक महत्वपूर्ण महाकाव्य को अंतिमरूप दिया जाय । यदि गोविन्द गिल्लाभाई यह कार्य पूर्ण नहीं करते तो यह ग्रंथ अधूरा ही रह जाता ।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने जिस अधिकार, योग्यता, प्रतिभा एवं आत्मा विश्वास से ग्रन्थ सम्पूर्ण किया है वह अप्रतिम एवं अनुपम प्रयास है, ग्रंथ का परायण या अध्ययन करने से यह कहीं भी आभास नहीं होता कि यह ग्रन्थ बाद में किसी अन्य व्यक्ति द्वारा सम्पूर्ण किया गया है तथा कहाँ से यह अंतर आया है, यह भी रेखांकित नहीं किया जा सकता ।

इस ग्रन्थ के विषय में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इस ग्रन्थ में एक ही कवि का वर्चस्व नहीं रहा, हालांकि श्री महिरावणसिंह राजकोट के धनाढ्य जमीदार ठाकुर थे, अतः ग्रंथकार के रूप में उनका नाम होना स्वाभाविक ही है, किन्तु ग्रंथ सम्पादन की विज्ञप्ति मे गोविन्द गिल्लाभाई ने स्पष्ट कहा है कि यह ग्रन्थ 'प्रवीण सागर' महिरावण सिंह जी तथा उनके सात मित्रों के सहयोग से तैयार किया गया है, इसमें किस किस विद्वान मित्र का कैसा कैसा सहयोग रहा होगा, यह नहीं कहा जा सकता ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने परम्परा से हटकर अपनी प्रतिभा सृजनशीलता, दक्षता, अनुभव, अध्ययन एवं पांडित्य के आधार पर जो सम्पादन कार्य

# सन्दर्भ ग्रन्थ


1. गुजरात के हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-7
2. गुजरात का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य, पृष्ठ-4
3. रास और रसान्वयी काव्य - डॉ. दशरथ ओझा
4. डॉ. भगवत शरण अग्रवाल-गुजरात का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य : संक्षिप्त परिचय पृष्ठ 15
5. शोध और स्वाध्याय - हरिवल्लभ भायाजी -हिन्दी अकादमी, गांधीनगर
6. देवमाया प्रबंध नाटक - देव कवि कृत, प्राच्यविद्या मंदिर हिन्दी विभाग क्रमांक 100 वस्ता में प्राप्त पांडुलिपि की पुष्पिका से उद्धृत
7. प्राच्य विद्या मंदिर बड़ौदा के हिन्दी विभाग की पांडुलिपि क्रमांक 99 ग्रंथाकर-कालिदास की पांडुलिपि की पुष्पिका से उद्धृत
8. प्राच्य विद्या मंदिर बडौदा की हिन्दी विभाग की पांडुलिपि सं. 86 में ग्रन्थ रसिक विनोद कर्त चन्द्रशेखर की ग्रन्थ-पुष्पिका से उद्धृत
9. प्राच्य विद्या मंदिर वडोदरा की हिन्दी पांडुलिपि संख्या - 63 राम त्रय स्तोत्र ग्रंथ की पुष्पिका से
10. प्राच्य विद्या मंदिर वडोदरा की पांडुलिपि संख्या 84 के ग्रंथ मधुमालती कामविलास की पुष्पिका से उद्धृत
11. प्राच्य विद्या मंदिर - बंध संख्या-79-ग्रंथ भाषाभूषण की पुष्पिक से
12. वही बंध संख्या - 73 ग्रंथ - श्री मदनमोहन वार्ता
13. वहीं वंध संख्या - 73
14. वही - बंध संख्या-70, ग्रन्थ - नाम माला से
15. वही बंध संख्या 69, ग्रन्थ-मलिंद शतक /कर्ता - गोपाल कवि की पुष्पिका से
16. वही, बंध संख्या-62 ग्रंथ अनेकार्थ मंजरी कर्ता-नन्ददास जी की पुष्पिका से
17. वही बंध संख्या 60 ग्रंथ - सेव्यस्वरूप कर्ता श्री मुरलीधर जी महाराज, पुष्पिका से
18. वही - बंध संख्या - 4 ग्रंथ रसिक प्रिया - केशवकृत
19. वही - बंध संख्या - 6 पुस्तक - सभाप्रकाश - कवि श्री हरी चरन दास कृत की पुष्पिका से
20. प्राच्य विद्या मंदिर हिन्दी विभाग पांडुलिपि बंध संख्या - अतिरिक्त - 9 में समायोजित

21. प्राच्य विद्यामंदिर बंध संख्या - 68 ग्रंथ - काव्य सुधारस - ग्रंथ कार - प्रानजीवन त्रिपाठी छन्द संख्या - 1028
22. प्राच्य विद्या मंदिर वंध संख्या - 207 हिन्दी विभाग, पुष्पिका - ग्रन्थ साहित्य चिंतामणि संग्रह
23. प्राच्य वि. म. बड़ौदा की हिन्दी विभाग की बंध संख्या 20 रू में गोविन्द हजारा की पुष्पिका से
24. वही बंध संख्या 202 में विज्ञाप्ति से